Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ○

(आले इमरान आयत : 33)

अनुवाद: तू कह दे अल्लाह का आज्ञा पालन करो और उसके रसूल का। अत: यदि वे फिर जाएँ तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों को पसन्द नहीं करता।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 10

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

7 मार्च 2019 ई. 29 जमादी उस्सानी 1440 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह।

अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

एक मुत्तक़ी को परलोक का जीवन यहीं दिखाया जाता है उन्हें इसी जीवन में ख़ुदा मिलता है, नज़र आता है और उनसे बातें करता है

एक वली का कथन है कि जिसको एक सच्चा ख्वाब उम्र में नसीब नहीं हुआ उसका अंजाम भयानक है

इंसान को चाहिए कि उसको दृष्टिगत रखकर नमाज में दुआ दर्द के साथ दुआ करें और उम्मीद रखें कि वह भी उन लोगों में से हो जाए जो तरक्की और विवेक हासिल कर चुके हैं ऐसा न हो कि इस जहान से बेबसीरत और अंधा उठाया जाए

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मुत्तक़ी को परलोक का जीवन यहीं दिखाया जाता है

यह एक नेमत है कि वलियों को ख़ुदा के फरिश्ते नज़र आते हैं। आइंदा की जिंदगी केवल ईमानी है लेकिन मुत्तक़ी को परलोक का जीवन यहीं दिखाया जाता है उन्हें इसी जीवन में ख़ुदा मिलता है, नज़र आता है और उनसे बातें करता है।

अत: अगर ऐसी सूरत किसी को नसीब नहीं तो उसका मरना और यहां से चले जाना बहुत खराब है। एक वली का कथन है कि जिसको एक सच्चा ख्वाब उम्र में नसीब नहीं हुआ उसका अंजाम भयानक है जैसे कि कुरान मोमिन के यह निशान ठहराता है - सुनो जिसमें यह निशान नहीं उसमें तक्वा नहीं सो हम सब की यह दुआ होनी चाहिए कि यह शर्त हममें पूरी हो। अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम, ख्वाब, मुकशिफात का वरदान हो क्योंकि मोमिन की यह विशेषता है तो यह होना चाहिए। बहुत सी और भी बरकतें हैं जो मुत्तक़ी को मिलती हैं उदाहरणतया सूर: फातिहा में जो कुरान के आरम्भ में ही है। अल्लाह तआला मोमिन को हिदायत फ़रमाता है-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ (सूर: फातिहा 7-8)

अर्थात हमें वह सीधा रास्ता दिखा उन लोगों का जिन पर तेरा इनाम और फज़ल है। यह इसलिए सिखाई गई के इंसान बुलंद हिम्मत होकर उससे खालिक ख़ुदा की इच्छा समझे और वह यह है कि ये उम्मत जानवरों के समान जीवन व्यतीत न करे बल्कि उसके तमाम पर्दे खुल जाएं जैसे कि शीआ फिरके वालों की आस्था है कि विलायत 12 इमामों के बाद समाप्त हो गई। इसके विपरीत इस दुआ से यही प्रकट होता है कि ख़ुदा ने पहले से इरादा कर रखा है कि जो संयमी हो और ख़ुदा की इच्छा के अनुसार हो तो वह उन मर्तबों को प्राप्त कर सके जो नबियों और सूफियों को हासिल होते हैं इससे यह भी पाया जाता है इंसान को बहुत सी शक्तियां मिली हैं जिन्होंने बढ़ना है और बहुत तरक्की करनी है। एक बकरा चूंकि इंसान नहीं उसके शक्तियां तरक्की नहीं कर सकतीं, बुलंद हिम्मत इंसान जब रसूलों और नबियों के हालात सुनता है कि वह ईनाम जो उस पाक जमाअत को हासिल हुए उस पर न केवल ईमान ही हो बल्कि उसे धीरे धीरे उन नेमतों का पक्का यकीन इल्मुल यक़ीन, ऐनुल यकीन और हक्कुल यकीन हो जाए ।

इल्म (ज्ञान) के तीन दर्जे हैं

इल्म (ज्ञान) के तीन दर्जे हैं- इल्मुल यक़ीन, ऐनुल यकीन और हक्कुल यकीन हो जाए। उदाहरणतया एक जगह से धुआं निकलता देखकर आग का विश्वास कर लेना इल्मुल यक़ीन है लेकिन खुद आँख से आग को देख लेना ऐनुल यकीन है, उन से बढ़कर दर्जा हक्कुल यकीन का है अर्थात आग में हाथ डालकर जलन और गर्मी से यकीन कर लेना कि आग मौजूद है। अत: वह इन्सान कैसा दुर्भाग्यशाली है जिसको तीनों में से कोई दर्जा हासिल नहीं। इस आयत के मुताबिक जिस पर अल्लाह तआला का फज़ल नहीं वह केवल अनुसरण मात्र में फंसा हुआ है। अल्लाह फरमाता है-وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अनकबूत - 70) जो हमारी राह में जेहाद करेगा (प्रयत्न करेगा) हम उसको अपनी राहें दिखला देंगे यह तो वादा है और उधर यह दुआ है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ। यह दिन 80 रात्र के इंसान को चाहिए कि उसको दृष्टिगत रखकर नमाज में दर्द के साथ दुआ करे और उम्मीद रखे कि वह भी उन लोगों में से हो जाए जो तरक्की और विवेक हासिल कर चुके हैं। ऐसा न हो कि इस जहान से बेबसीरत और अंधा उठाया जाए। फ़रमाया- مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्त्राईल- 73) अर्थात जो इस दुनिया में अँधा है वह उस दुनिया (परलोक) में भी अँधा है जिसका मतलब यह है कि उस जहान को देखने के लिए इसी जहान से हमको आँखें ले जाने हैं। परलोक को अनुभव करने के लिए ज्ञानेंद्रियां की तैयारी इसी जहान में होगी। अत: क्या यह अनुमान हो सकता है कि अल्लाह तआला वादा करे और पूरा न करे।

अंधा कौन है

अंधे से अभिप्राय वह है जो रूहानी मआरिफ़ और रूहानी आनंदो से रिक्त है। एक व्यक्ति केवल अनुसरण मात्र से कि मुसलमान के घर में पैदा हो गया मुसलमान कहलाता है दूसरी ओर इसी तरह एक ईसाई ईसाइयों के यहां पैदा होकर ईसाई हो गया। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा, रसूल और कुरान की कोई इज्जत नहीं होती, उसकी धर्म से मोहब्बत भी ऐतराज़ के योग्य होती है। ख़ुदा और रसूल का अपमान करने वालों में उसका नाम होता है। इसका कारण सिर्फ यह है कि ऐसे व्यक्ति की रूहानी आंख नहीं, उसमें धर्म की मोहब्बत नहीं। अन्यथा मोहब्बत करने वाला महबूब के खिलाफ क्या कुछ पसंद करता है? अत: अल्लाह तआला ने सिखाया है कि मैं तो देने को तैयार हूं अगर तू लेने को तैयार है। तो यह दुआ करना ही इस हिदायत को लेने की तयारी है।

इस दुआ के बाद सूर: बकरा के आरंभ में ही هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल-बक़र: 3) कहा गया तो मानो ख़ुदा तआला ने देने की तैयारी की अर्थात यह किताब संयमी को कमाल तक पहुंचाने का वादा करती है। अत: इसके अर्थ यह हैं कि यह किताब उनके लिए लाभदायक है जो परहेज करते करने और शिक्षा के सुनने को तैयार हैं। इस मर्तबे का मुत्तक़ी वह है जो अपने स्वभाव से ऊपर उठकर सच्ची बात सुनने को तैयार हो जैसे जब कोई मुसलमान होता है तो वह मुत्तक़ी बनता है जब किसी अन्य धर्म वाले के अच्छे दिन आए तो उसमें संयम पैदा हुआ और अहंकार आदि दूर हो गए। ये समस्त रोकें थीं जो दूर हो गईं उनके दूर होने से अँधेरे घर की खिड़की खुल गई और प्रकाश अंदर दाखिल हो गया। यह जो फरमाया की किताब संयमियों के लिए हिदायत है अर्थात هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ तो इत्तक़ा जो इफ्तेआल के बाब से है और यह बाप तकल्लुफ के लिए आता है अर्थात उसमें इशारा है कि यहां हम जितना तक्वा चाहते हैं वह तकल्लुफ से खाली नहीं जिस की सुरक्षा के लिए इस किताब में हिदायतें हैं। मानो मुत्तक़ी को नेकी करने में तकलीफ से काम लेना पड़ता है

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 12 से 14)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

रिपोर्ट, 124वाँ जलसा सालाना क़ादियान, सन् 2018 ई.

अहमदियत के मर्कज़ क़ादियान दारुल अमान में 124वें जलसा सालाना का कामियाब और बाबरकत आयोजन

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रेम के स्थान तक कोई नहीं पहुँच सकता, आपका हर शब्द अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम में पूर्णत: लीन होने का प्रमाण है

साल के इन आखिरी दिनों को भी दुरूद से भर दें और नए वर्ष का स्वागत भी दुरूद व सलाम से करें ताकि हम जल्द से जल्द उन भलाइयों को पाने वाले हों जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व से सम्बद्ध हैं।

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इण्टरनेशनल के माध्यम से जलसा सालाना के अन्तिम दिन सैयदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस का जलसा में शामिल होने वालों से दूरदर्शितापूर्ण सम्बोधन

★मैंने इस बस्ती (अर्थात् क़ादियान) में ख़ुदा तआला को देख लिया है। मैंने इस्लाम की भविष्यवाणियाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक के हाथ पर पूरी होती हुई देखी हैं

संसार में बहुत से इमाम महदी का दावा करने वाले आए और उन्होंने दुनिया में अपनी तब्लीग़ फैलने की भविष्यवाणियाँ कीं, लेकिन एक के अतिरिक्त किसी की भविष्यवाणी पूरी न हुई और यह वही महापुरुष है जो बहिश्ती मक़बरा क़ादियान में दफ़्न है जिसकी क़ब्र के सिरहाने लगे पत्थर में लिखा है

"मज़ार मुबारक हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व इमाम महदी अलैहिस्सलाम"

★मैंने अहमदी लिटरेचर का अध्ययन किया है और अहमदी मुसलमानों से मिलकर इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि अहमदियत ही सच्चा इस्लाम है और अहमदी दूसरे मुसलमानों की अपेक्षा अधिक सच्चे और अच्छे मुसलमान हैं।

मुझे मालूम नहीं कि अभी कितनी सदियाँ और गुज़रेंगी लेकिन मैं यह भलीभाँति जानता हूँ कि दुनिया में सबसे ऊँचा नारा क़ादियान की बस्ती का गूँजेगा। (इन्शाअल्लाह)

जलसा सालाना क़ादियान में शामिल होने वाले नव मुबायीन के ईमानवर्धक विचार

★जमाअत दुनिया भर में जो मुहब्बत का पैग़ाम फैला रही है वह प्रशंसनीय है, मैं हुज़ूरे अनवर का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप दुनिया भर में मुहब्बत का पैग़ाम फैला रहे हैं। आपकी जमाअत के ख़लीफ़ा पूरी दुनिया में मुहब्बत और आपसी भाईचारे का शिक्षा दे रहे हैं और पूरी दुनिया को तबाही से बचाने की कोशिश में लगे हुए हैं।

★मुस्लिम समाज सदैव से सिख मज़हब के अनुयायियों का हमदर्द रहा है, मुस्लिम समाज ने हर मुश्किल समय में हमारा साथ दिया है और इन दोनों धर्मों की यह विशेषता है कि ये एक ख़ुदा की इबादत करते हैं।

★दुनिया में ऐसे जलसे बहुत कम होते हैं जहाँ से इन्सानियत का नारा बुलन्द होता है, मानवता की सेवा सबसे महान कार्य है जो आपकी जमाअत कर रही है।

★आज जिस सुन्दर ढंग से मुहब्बत और अमन का पैग़ाम जमाअत की ओर से दिया जा रहा है वह प्रशंसनीय है।

जलसा सालाना में सम्मिलित होने वाले कुछ धार्मिक एवं राजनीतिक व्यक्तियों के हार्दिक विचार

✳48 देशों के 18864 अहमदियों का जलसा सालाना क़ादियान में सम्मिलन

✳हुज़ूरे अनवर के समापन भाषण के समय लन्दन में भी 5345 अहमदियों का सम्मिलन

✳नमाज़ तहज्जुद ✳दर्सुल क़ुरआन और ज़िकरे इलाही से ओत-प्रोत माहौल ✳उलमा किराम के ठोस और तर्कपूर्ण भाषण ✳सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन ✳अतिथियों के ईमानवर्धक विचार ✳देशीय एवं विदेशीय भाषाओं में जलसा के प्रोग्रामों का सीधा अनुवाद ✳अहबाब-ए-जमाअत की जानकारी में बढ़ोत्तरी के लिए तरबियती विषयों पर आधारित डॉक्यूमेन्टरी और विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रदर्शनियों का आयोजन ✳34 निकाहों का ऐलान ✳प्रिन्ट व इलेक्ट्रानिक मीडिया में जलसा की कवरेज✳शान्ति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में जलसा की समस्त कार्यवाही का समापन ✳ 19-21 दिसम्बर अरबी प्रोग्राम इस्मऊ सौतस्समाअ जाअलमसीह जाअलमसीह का---इण्टरनेशनल क़ादियान स्टूडियो से लाइव प्रसारण ✳3-5 जनवरी The Messiah of the Age के शीर्षक से अफ्रीका के लिए लाइव प्रोग्राम का प्रसारण

रिपोर्ट -मन्सूर अहमद मसरूर (मुन्तज़िम रिपोर्टिंग)

(आख़िरी क़िस्त)

महिलाओं का जलसा

जलसा सालाना 2018 ई. के अवसर पर दूसरे दिन दोपहर के बाद लजना इमाइल्लाह भारत ने महिला जलसा गाह में अपना प्रोग्राम आयोजित किया। सभा की अध्यक्षता मोहतरमा साहिबज़ादी अमतुल क़ुद्दूस बेगम साहिबा आफ रब्वा ----स्व. मोहतरम साहिबज़ादा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब भूतपूर्व नाज़िर आला रब्वा ने की। तिलावत क़ुरआन करीम मोहतरमा नय्यर: तनवीर फ़ारिअ: साहिबा ने की और उसका उर्दू अनुवाद मोहतरमा तहमीदा उमर ने प्रस्तुत किया। मोहतरमा राशिदा तनवीर साहिबा ने सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा रचित निम्नलिखित कविता प्रस्तुत की।

मेरे मौला मेरी यह इक दुआ है
तेरी दरगाह में इजज़ो बुक़ा है

इसके बाद मोहतरमा तय्यबा रज़्ज़ाक़ साहिबा सदर लजना इमाइल्लाह हैदराबाद ने "सीरत हज़रत साहिबज़ादी अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा" के शीर्षक पर तक़रीर की। फिर मोहतरमा क़ुरअतुल अैन साहिबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निम्नलिखित कविता प्रस्तुत की:-

हमें उस यार से तक़्वा अता है
न यह हम से कि एहसान-ए-ख़ुदा है

सुस्वर से प्रस्तुत किया। इसके बाद मोहतरमा बुशरा साहिबा सदर लजना इमाइल्लाह भारत ने "हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में लजना इमाइल्लाह की ज़िम्मेदारियाँ" के शीर्षक पर तक़रीर की। इसके बाद लजना इमाइल्लाह केरल की मेम्बरात और नासिरातुल अहमदिया क़ादियान की मेम्बरात ने तराना प्रस्तुत किया। इसके बाद सभाध्यक्षा ने

पृष्ठ 8 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

"हक़ीक़त में उनके बारे में जो लिखा गया है .....उनकी विशेषताएँ इससे बहुत अधिक थीं"

जंग यमामा में शहादत का महान मर्तबा पाने वाले बद्री सहाबी हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा के पवित्र जीवन का ईमान वर्धक एवं मनमोहक वर्णन

ख़िलाफ़त अहमदिया से अत्यंत प्रेम और आज्ञापालन का संबंध रखने वाले एक अत्यंत विनम्र जमाअत के पुराने खादिम और बुज़ुर्ग, अहमदिया सेकेंडरी स्कूल घाना के पहले वाइस प्रिंसपल, तालीमुल इस्लाम कालेज और फिर जामिया अहमदिया में अध्यापन का कर्तव्य पूर्ण करने वाले सिलसिला अहमदिया के महान विद्वान प्रोफ़ेसर सऊद अहमद खान के देहांत पर उनका वर्णन और नमाज़ जनाज़ा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 फरवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का वर्णन है उनका नाम है हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा, आपकी कुन्नियत अबू हुज़ैफ़ा थी, उनका नाम हुशैम या हाशिम या कैस, हिस्ल, इस्ल और मिक्सम वर्णन किया जाता है, आपकी माता उम्मे सफवान थीं उनका नाम फातिमा पुत्री सफवान था। आप बड़े लम्बे कद तथा सुन्दर चेहरे के मालिक थे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दार-ए-अर्कम में दाखिल होने से पूर्व इस्लाम में शामिल हो चुके थे (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 61, 62 प्रकाशित दारुल कुतुब अल इल्मिया बैरूत 1999 ई०) (मुस्तद्रिक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 248 हदीस 4993 पुस्तक मारिफ़त सहाबा, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बैरूत 2002 ई०) आरम्भिक ईमान लाने वालों में से थे। इसका वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने लिखा है कि अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा, बनी उमय्यिा में से थे, उनके पिता जी का नाम उतबा बिन रबीअ: था, क़ुरैश के सरदारों में से थे। अबू हुज़ैफ़ा जंग ए यमामा में शहीद हुए जो हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त के ज़माने में मसीलमा कज्ज़ाब के साथ हुई थी। (उद्धृत सीरत ख़ातमुन्नबीय्यीन, मिर्ज़ा बशीर अहमद एम ए पृष्ठ 124)

हज़रत अबू हुज़ैफ़ा हब्शा की ओर दोनों हिजरतों में शामिल हुए थे और आपकी बीवी हज़रत सहला सुपुत्री सुहेल ने भी आपके साथ हिजरत की थी। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 62, 62 प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बैरूत 1990 ई०)

हिजरत हब्शा के बारे में पहले भी सहाबा के वर्णन में चर्चा हो चुकी है कि किस प्रकार हुई और क्यों हुई? यहाँ भी संक्षेप से वर्णन कर देता हूँ। विभिन्न इतिहास की पुस्तकों से और हदीसों से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने जो परिणाम निकाला है उसको और अधिक संक्षिप्त करके या उसमें से कुछ बातें लेकर वर्णन करूँगा। आप रज़ि० लिखते हैं कि- जब मुसलमानों पर यातनाएँ सीमा पार कर गईं तथा क़ुरैश अपने अत्याचारों में प्रगति करते गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से फरमाया कि वे हब्शा की ओर हिजरत कर जाएँ और फरमाया कि हब्शा का राजा न्यायप्रिय तथा न्यायनिष्ठ है, उसके शासन में किसी पर अन्याय नहीं होता। जब मुसलमानों की कठिनाईयाँ चरम सीमा को पहुंच गईं तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया कि जिन जिन से सम्भव हो सके, हब्शा की ओर हिजरत कर जाएँ। और फ़रमाया की हब्शा का बादशाह न्यायप्रिय है उसकी हुकूमत में किसी पर अत्याचार नहीं होता। उस समय में हब्शा एक दृढ़ ईसाई हुकूमत थी और वहां का बादशाह नजाशी कहलाता था। हब्शा के साथ अरब के तिजारती सम्बन्ध थे जिस समय ये लोग हिजरत करके गए हैं तो उस समय के नजाशी का जो अपना नाम था वह असहमा था, जो एक न्यायप्रिय, बुद्धिमान और शक्तिशाली बादशाह था। बहरहाल जब मुसलमानों पर यातनाएँ सीमा पार कर गईं तथा क़ुरैश अपने अत्याचारों में प्रगति करते गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से फरमाया कि जिन जिन से संभव हो सके वे हब्शा की ओर हिजरत कर जाएँ। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमाने पर रजब के महीने सन पाँच नबवी में गयारह पुरुष तथा चार महिलाओं ने हब्शा की ओर हिजरत की, उनमें से प्रसिद्ध नाम ये हैं- हज़रत उस्मान बिन अफ्फान, और उनकी पत्नी रुक़य्या पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अब्दुर रहमान बिन ऑफ, ज़ुबैर बिन अलअवाम अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा, जिनका वर्णन हो रहा है ये भी उस समूह में सम्मिलित थे। उस्मान बिन मज़ऊन, मुसअब बिन उमैर, अबू सलमा बिन अब्दुल असद और उनकी पत्नी उम्मे सलमा।

हसरत मियां बशीर अहमद साहब ने लिखा है कि यह एक अजीब बात है कि प्राथमिक मुहाजिरों में से अधिकतर संख्या उन लोगों की थी जो क़ुरैश के शक्तिशाली क़बीलों से संबंध रखते थे और कमज़ोर लोग कम नज़र आते थे जिससे दो बातों का पता चलता है पहली यह कि शक्तिशाली क़बीलों से संबंध रखने वाले लोग भी क़ुरैश के अत्याचार से सुरक्षित नहीं थे और दूसरे यह कि कमज़ोर लोग उदाहरणतया दास आदि उस समय ऐसी कमज़ोरी और बेबसी की हालत में थे कि हिजरत की शक्ति भी नहीं रखते थे। जब ये मुहाजिर दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए शओबा नामक स्थान पर पहुंचे जो उस ज़माने में अरब का एक बन्दरगाह था तो अल्लाह तआला की ऐसी कृपा हुई कि उनको एक व्यवसायिक जहाज़ मिल गया जो हब्शा की ओर जाने के लिए तैयार था। इस प्रकार ये उसमें सवार हो गए। हब्शा पहुंच कर मुसलमानों को बड़ा शांति पूर्ण जीवन मिल गया तथा ख़ुदा-ख़ुदा करके क़ुरैश के अत्याचारों से छुटकारा मिला। परन्तु जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने बयान किया है कि अभी इन प्रवासियों को हब्शा में गए अधिक समय नहीं हुआ था कि एक उड़ती हुई अफवाह उन तक पहुंची कि सारे क़ुरैश मुसलमान हो गए हैं तथा मक्का में अब पूर्णत: शांति हो गई है। इस सूचना का यह परिणाम हुआ कि अधिकांश मुहाजिर सोचे समझे बिना वापस आ गए।

इस अफवाह के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने कुछ प्रकाश डाला है कि किस प्रकार फैली और क्यों? इस अफवाह का क्या कारण था? विभिन्न इतिहासकारों से लेकर वह लिखते हैं कि यद्यपि वास्तविकता में यह अफवाह बिल्कुल झूठी और बेबुनियाद थी जो हब्शा के मुहाजिरीन को वापस लाने और उनको कष्टों में डालने के उद्देश्य से क़ुरैश ने प्रसिद्ध कर दी होगी बल्कि अधिक विचार करके देखा जाए तो इस अफवाह और मुहाजिरीन की वापसी का किस्सा ही निराधार नज़र आता है (लेकिन उन्होंने लिखा है) अगर उसको सही समझा जाए तो संभव है कि उसकी तह में वह घटना हो जो कुछ हदीसों में बयान हुई है और जैसा कि बुखारी में भी यह घटना लिखी है कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काबा के प्रांगण में सूर: नजम की आयात की तिलावत की। उस समय वहां कुफ्फ़ार के कई सरदार जो थे वह भी उपस्थित थे, कुछ मुसलमान भी थे जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूरत खत्म की तो सूरह नजम पढ़ने के बाद आपने सजदा किया और आपके साथ ही तमाम मुसलमान और काफिर भी सजदे में गिर गए। काफिरों के सजदे का कारण हदीस में यह बयान हुआ है कि मालूम होता है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत ही भावुक आवाज़ में ख़ुदा की आयात की तिलावत की और वह आयात भी ऐसी थीं जिनमें विशेष रूप से ख़ुदा के एकेश्वरवाद और उसकी शक्ति और सामर्थ्य का अत्यंत सरल एवं सुबोध भाषा में चित्र खींचा गया और उसके उपकारों को याद दिलाया गया है और फिर एक अत्यंत रौबदार और तेजस्वी कलाम में क़ुरैश को डराया गया था कि अगर वह अपने षडयंत्रों से नहीं रुकेंगे तो उनका वही हाल होगा जो उनसे पहले क़ौमों का हुआ है जिन्होंने ख़ुदा के रसूलों को झुठलाया और फिर आखिर में उन आयात में ही हुकुम दिया गया था कि आओ और अल्लाह के सामने सजदे में गिर जाओ। और उन आयात की तिलावत के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सब मुसलमान एक साथ सजदे में गिर गए तो इस कलाम और इस नज़ारे का ऐसा जादू करने वाला असर क़ुरैश पर हुआ कि वह भी सहसा अवश होकर मुसलमानों के साथ सजदे में गिर पड़े।

हज़रत मियां बशीर अहमद साहब लिखते हैं कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि ऐसे अवसरों पर ऐसे हालात के अधीन जो वर्णन किए गए हैं यह कभी-कभी इंसान का दिल रोब में आ जाता है, परिवर्तित हो जाता है और वह अवश होकर ऐसी हरकत कर बैठता है जो वास्तव में उसके सिद्धांतों और धर्म के विपरीत होती है। अत: हमने देखा है कि कभी-कभी एक कठोर और बड़ी आफत के समय एक निरीश्वरवादी भी अल्लाह-अल्लाह या राम-राम पुकार उठता है और क़ुरैश तो निरीश्वरवादी न थे बल्कि ख़ुदा की हस्ती के क़ायल थे यद्यपि मूर्तियों को ख़ुदा का भागीदार ठहराते थे। आजकल भी हम देखते हैं कई निरीश्वरवादियों से बात होती है जब उनसे पूछोगे कि अगर तुम्हें कोई कठिनाई सम्मुख आ जाए तो एकदम ख़ुदा का नाम तुम्हारे दिमाग में आता है या मुंह से आता है? तो वे स्वीकार करते हैं कि आता है। अत: यह सूरत के पढ़ने का सूरत के शब्दों का और मुसलमानों के कर्म का एक असर था कि काफिरों के सरदार जो थे वह भी साथ ही सजदे में गिर गए।

अत: मुसलमानों की जमाअत यकायक सजदे में गिर गई तो उसका ऐसा जादूपूर्ण प्रभाव हुआ कि उनके साथ क़ुरैश भी अवश होकर सजदे में गिर गए लेकिन ऐसा असर सामान्यता अल्प समय के लिए होता है और इंसान फिर जल्दी ही अपनी वास्तविक हालत की ओर लौट आता है। अत: काफिरों के समूह भी इसी प्रकार वापस लौट गए, उनका वही हाल हो गया। बहरहाल यह एक घटना है जो सही हदीसों से सिद्ध है बुखारी में भी लिखा है। परन्तु अगर मुहाजिरीन हब्शा की वापसी की खबर सही है तो ऐसा मालूम होता है कि इस घटना के बाद क़ुरैश ने जो मुहाजिरीन हब्शा के वापस लाने के लिए बेताब हो रहे थे कि यह लोग हिजरत करके क्यों चले गए, हमारे हाथों से निकल गए, अपने इस कर्म को आड़ बनाकर स्वयं ही अफवाह प्रसिद्ध कर दी होगी कि क़ुरैश मक्का मुसलमान हो गए हैं और यह कि अब मक्का में मुसलमानों के लिए बिल्कुल अमन है और जब यह अफवाह मुहाजिरीन ए हब्शा तक पहुंची तो वे सहसा उसे सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और सुनते ही ख़ुशी के जोश में बिना सोचे समझे वापस आ गए लेकिन जब वे मक्का के निकट पहुंचे तो वास्तविकता का ज्ञान हुआ जिस पर कुछ तो छिप छिप कर तथा कुछ किसी शक्तिशाली एवं प्रभावकारी क़ुरैश के सरदार की सुरक्षा में होकर मक्का में आ गए और कुछ वापस चले गए। जो भी हो अल्लाह ही उचित जानता है।

अत: यदि मुहाजिर-ए-हब्शा वापस आए भी थे तो उनमें से अधिकांश फिर वापस चले गए और चूँकि क़ुरैश दिन प्रतिदिन अपने अत्याचारों में बढ़ते जाते थे तथा उनकी यातनाएँ दिन प्रतिदिन बढ़ रही थीं। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद पर दूसरे मुसलमानों ने भी गुप्त रूप से हिजरत की तय्यारी शुरु कर दी तथा अवसर पाकर धीरे धीरे निकलते गए। यह हिजरत का सिलसिला ऐसा शुरु हुआ कि अन्तत: इन हब्शा के मुहाजिरों की संख्या एक सौ के लगभग पहुंच गई जिनमें अट्ठारह महिलाएँ भी थीं और मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बहुत ही थोड़े लोग मुसलमान रह गए। इस हिजरत को कुछ इतिहासकार हिजरत-ए-हब्शा द्वित्तीय के नाम से भी पुकारते हैं।

(उद्धृत सीरत खातमुन्नबीय्यीन, मिर्ज़ा बशीर अहमद एम ए पृष्ठ 146, 149)

एक पहली हिजरत थी और फिर बाद में जो दूसरे लोग गए। इसी प्रकार बाद में जब मदीना हिजरत की अनुमति प्रदान हुई तो अबू हुज़ैफ़ा और हज़रत सालिम जो आपके द्वारा स्वतंत्र किए हुए गुलाम थे, दोनों मदीना हिजरत कर गए। पहली हिजरत तो उन्होंने हब्शा की थी उस ज़माने में वापस भी आ गए फिर दूसरी हिजरत उन्होंने मदीना में की थी जहाँ आप दोनों ने हज़रत अबाद बिन बशर के यहाँ निवास किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुज़ैफ़ा और हज़रत अबाद बिन बशर के बीच बन्धुत्व का सम्बंध स्थापित फरमाया। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 62, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बैरूत 1990 ई०) हज़रत अबू हुज़ैफ़ा सिरिय्या हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश में भी शामिल थे। (सीरत इब्ने हिशाम पृष्ठ 286 बाब सिर्यतुअब्दुल्लाह बिन हजश, प्रकाशित दार इब्न हज़म बैरूत 1990 ई०)

यह सिरिय्या जो अब्दुल्लाह बिन हज्श का था उसका विवरण और इस प्रकार है कि मक्का के एक रईस कज़र बिन जाबिर बिन फहरी ने क़ुरैश के एक दल के साथ पूरी चतुराई के साथ मदीने की चरागाह पर जो नगर से तीन मील की दूरी पर थी, अचानक आक्रमण कर दिया तथा मुसलमानों के ऊँट इत्यादि लूट कर ले गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली तो आप तुरन्त ज़ैद बिन हारसा को अपने पीछे अमीर नियुक्त करके तथा मुहाजिरों की एक जमाअत को साथ लेकर उसका पीछा करने के लिए निकले और सफवान नामक स्थान तक जो बद्र के पास है उसका पीछा किया परन्तु वह बच कर निकल गया। इस अभियान को गज़वा बद्र ऊला (बद्र का प्रथम युद्ध) भी कहते हैं। कजर् बिन जाबिर का यह आक्रमण एक असाधारण बद्दुओं वाला उपद्रव नहीं था अपितु नि:सन्देह वह क़ुरैश की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध विशेष इरादे से आया था बल्कि सम्भव है कि उसका निश्चय विशेष रूप से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आहत करने का हो किन्तु मुसलमानों को जागरुक पाकर उनके ऊँटों पर हाथ साफ करता हुआ निकल गया। इससे यह भी पता चलता है कि मक्का के क़ुरैश ने यह इरादा कर लिया था कि मदीने पर छापे मार मार कर मुसलमानों का विनाश किया जाए।

कजर् बिन जाबिर के अचानक हमले ने मुसलमानों को अत्यधिक भयभीत कर दिया और चूँकि क़ुरैश के सरदारों की यह धमकी पहले से मौजूद थी कि हम मदीने पर आक्रमण करेंगे तथा मुसलमानों का पूर्णत: विनाश कर देंगे, इस कारण से मुसलमान बड़े चिंतित हुए तथा इन्हीं आशंकाओं को देख कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह इरादा फरमाया कि क़ुरैश की गतिविधियों का निकट से निरीक्षण किया जाए। अत: इस उद्देश्य के लिए आप सल्ल। ने आठ मुहाजिरों की एक पार्टी तय्यार की तथा कारणवश इस पार्टी में ऐसे आदमियों को रखा जो क़ुरैश

के विभिन्न कबीलों से सम्बंध रखते थे ताकि क़ुरैश के गुप्त षड्यन्त्रों के विषय में सूचनाएँ प्राप्त करने में कठिनाई न हो तथा पार्टी पर आपने अपने फूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन हज्श को अमीर नियुक्त फरमाया, उनमें ये हुज़ैफ़ा बिन उतबा भी शामिल थे। और इस विचार से कि इस पार्टी के उद्देश्य सामान्य मुसलमानों से भी छुपे रहें आपने इस सिरिय्या को रवाना करते हुए इस सिरिय्या के अमीर को भी यह नहीं बताया था कि तुम्हें कहाँ और किस उद्देश्य से भेजा जा रहा है बल्कि चलते हुए एक पत्र सील करके आप के हाथ में दे दिया और फरमाया कि इस पत्र में तुम्हारे लिए निर्देश वर्णित हैं जब तुम मदीना से अमुक दिशा की तरफ 2 दिन का सफर तय कर लो तो फिर इस पत्र को खोल कर उसके निर्देशों के अनुसार पालन करना। अत: अब्दुल्ला और उनके साथी अपने आका के आदेश के अधीन रवाना हो गए और जब 2 दिन का सफर तय कर चुके तो अब्दुल्ला ने हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश को खोल कर देखा तो उसमें यह शब्द थे कि तुम मक्का और ताइफ़ के मध्य नखला नामक वादी में जाओ और वहां जाकर क़ुरैश की गतिविधियों की जानकारी लो और फिर हमें सूचित करो और चूंकि मक्का से इतने निकट होकर गतिविधियों की सूचना इकट्ठा करने का काम बड़ा नाज़ुक था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पत्र के नीचे यह निर्देश भी लिखा था कि इस मिशन के मालूम होने के बाद अगर तुम्हारा कोई साथी इस पार्टी में शामिल रहने से बहाना करें या पीछे हटना चाहें तो उसको किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो अगर वह वापस चला आना चाहे तो उसे वापस आने की अनुमति है। अब्दुल्ला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देश अपने साथियों को सुना दिए और सब ने एक साथ मिलकर प्रसन्नता पूर्वक इस सेवा के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया और कहा कि हम हाजिर हैं।

इसके बाद यह जमाअत नखला की वादी की ओर चली। रास्ते में सअद बिन अबी वक्कास तथा उतबा बिन गज़वान का ऊँट गुम हो गया और वे उसको खोजते खोजते अपने साथियों से बिछड़ गए तथा बड़ी तलाश करने के बाजूद उन्हें न मिल सके और अब यह पार्टी केवल छ: व्यक्तियों की रह गई। मुसलमानों की यह छोटी सी जमाअत नखला पहुंची और अपने काम में व्यस्त हो गई। उनमें से कुछ लोगों ने इस बात को गुप्त रखने के लिए अपने सिर के बाल भी मुंडवा दिए ताकि उनके निकट से गुज़रने वाले यात्री यही समझें कि ये लोग भी उमरे के लिए जा रहे हैं। कहते हैं कि अभी उनको वहाँ पहुंचे अधिक समय नहीं बीता था कि सहसा वहाँ एक क़ुरैश का छोटा सा दल भी आ गया जो ताएफ से मक्का की ओर जा रहा था तथा दोनों दल एक दूसरे के सामने हो गए तथा उनको पता चल गया कि ये मुसलमान हैं और उन्होंने उनके साथ युद्ध करने की ठान ली। मुसलमानों ने आपस में विचार विमर्श किया कि अब क्या करना चाहिए क्यूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको गुप्त रूप से सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए भेजा था किन्तु दूसरी ओर क़ुरैश के दल के साथ युद्ध आरम्भ हो चुका था तथा अब दोनों दल एक दूसरे के सामने थे और फिर प्राकृतिक रूप से यह सम्भावना भी थी कि अब चूंकि क़ुरैश के लोगों ने मुसलमानों को देख लिया है तो ख़बर पहुँचाने का भेद भी गोपनीय न रह सकेगा और एक दिक्कत यह भी थी कि कुछ मुसलमान समझते थे कि शायद ये दिन रजब अर्थात हुरमत वाले महीने के अन्तिम दिन हैं और जिसमें अरब की पुरानी प्रथानुसार लड़ाई नहीं होनी चाहिए थी। और कुछ समझते थे कि रजब बीत गया है और शाबान आरम्भ हो गया है। और कुछ रिवायतों में यह है कि सिरिय्या जमादिउल आखिर के महीने में भेजा गया था और शंका यह थी कि यह दिन जमादी का है या रजब का? लेकिन दूसरी ओर नखले की वादी भी ठीक हरम के क्षेत्र की सीमा पर स्थित थी और यह स्पष्ट था कि यदि आज ही कोई निर्णय न हुआ तो कल यह काफ़ला हरम के क्षेत्र में प्रवेश कर जाएगा जिसकी हुरमत विश्वसनीय होगी।

अत: इन सब बातों को सोच कर उन छ: मुसलमानों ने यही निर्णय लिया कि उस दल पर आक्रमण करके या तो उनको बन्दी बना लिया जाए अथवा उनकी हत्या कर दी जाए। अत: उन्होंने अल्लाह का नाम लेकर आक्रमण कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप क़ुरैश का एक आदमी जिसका नाम उमरू बिन अलहद्रमी था, मारा गया तथा दो आदमी बन्दी बना लिए गए किन्तु चौथा आदमी भाग निकला और मुसलमान उसे पकड़ न सके तथा इस प्रकार उनकी धारणा जो थी कि उनको पकड़ लिया जाए अथवा मार दिया जाए, वह सफल होते होते रह गई उसके बाद मुसलमानों ने उस दल के सामान पर कब्ज़ा कर लिया और चूँकि क़ुरैश का एक आदमी बचकर निकल गया था तथा विश्वास था कि इस लड़ाई की सूचना शीघ्र ही मक्का पहुंच जाएगी, अब्दुल्लाह बिन हज्श तथा उसके साथी युद्ध में लूटा हुआ सामान लेकर जल्दी जल्दी मदीना की ओर वापस लौट आए।

पश्चिमी विद्वान यह ऐतराज़ करते हैं कि यह देखो यह जान-बूझ कर भेजा गया था काफले पर आक्रमण करवाया गया, जो पूर्णत: ग़लत है। वास्तविकता यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह सूचना मिली कि उनके सहाबियों ने दल पर आक्रमण किया था तो आप बड़े अप्रसन्न हुए और फरमाया कि मैंने तुम्हें शहर-ए-हराम में लड़ने की अनुमति नहीं दी थी और फिर आपने लूटा हुआ सामान स्वीकार करने से इंकार कर दिया कि इसमें से मैं कुछ भी नहीं लूँगा। इस पर अब्दुल्लाह और उनके साथी बड़े पछताए तथा लज्जित हुए और उन्होंने समझा कि बस अब हम ख़ुदा और उसके रसूल की अप्रसन्नता के कारण नष्ट हो गए। उनमें बहुत भय उत्पन्न हुआ सहाबा ने भी उनको बहुत बुरा भला कहा। मदीना में जो सहाबा थे उन्होंने भी कहा कि तुमने वह काम किया जिसका तुम्हें आदेश नहीं दिया गया था और तुमने पवित्र महीने में लड़ाई की, हुरमत वाले महीने मे लड़ाई की जबकि इस मुहिम में तुमको बिलकुल भी लड़ाई का आदेश नहीं था।

दूसरी ओर क़ुरैश ने भी शोर मचाया कि मुसलमानों ने शहर-ए-हराम की अवज्ञा की है। और चूंकि जो व्यक्ति मारा गया था अर्थात अमरो बिन अल हज़रमी वह एक रईस आदमी था और फिर वह उत्बा बिन रबीआ रईस मक्का का हलीफ था इस कारण भी उस समय उस घटना ने क़ुरैश के क्रोध को बहुत भड़काया और उन्होंने पहले से भी बढ़कर मदीना पर आक्रमण कि तयारी आरम्भ कर दी। अत: इस घटना पर मुस्लमान और काफ़िरों दोनों में ही खूब बातें बनीं। ये बातें होने लगीं कि देखो पवित्र महीने में इन्होने आक्रमण किया है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब सीरत खात्मुन्नबिय्यीन में लिखते हैं कि अन्तत: क़ुरआन की वह्यी अवतरित होकर मुसलमानों की सांत्वना का कारण बनी कि-

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَ صَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ كُفْرٌۢ بِهٖ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۫ وَ اِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَ الْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَ لَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ

(अल बक़रह- 218)

अर्थात लोग तुझसे पूछते हैं कि पवित्र महीने में लड़ना कैसा है तो उनको जवाब दे कि निसंदेह पवित्र महीने में लड़ना बहुत बुरा है लेकिन पवित्र महीने में ख़ुदा के धर्म से लोगों को बलपूर्वक रोकना बल्कि पवित्र महीने और पवित्र मस्जिद दोनों का इंकार करना अर्थात उनकी पवित्रता को तोड़ना और फिर पवित्र इलाके से उनके रहने वालों को बलपूर्वक निकालना जैसा कि हे मुश्रिको! तुम लोग कर रहे हो, मुसलमानों को निकाल रहे हो यह सब बातें ख़ुदा के निकट पवित्र महीने में लड़ने की अपेक्षा बहुत अधिक बुरी हैं और अधिक बुरी बात है और निसंदेह पवित्र महीने में देश के अंदर फसाद पैदा करना उस क़त्ल से बुरा है जो फसाद को रोकने के लिए किया जावे। और हे मुसलमानो! काफिरों का तो यह हाल है कि वह तुम्हारी दुश्मनी में इतने अंधे हो रहे हैं कि किसी समय और किसी जगह भी वह तुम्हारे साथ लड़ने से बाज़ नहीं आएंगे और वह अपनी यह लड़ाई जारी रखेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे धर्म से फिर दें इस शर्त पर कि वह उसकी ताकत पाएं।

अत: इतिहास से प्रमाणित है कि इस्लाम के विरुद्ध क़ुरैश के सरदार अपने खूनी अभियान को वर्जित महीनों में भी बराबर जारी रखते थे। यह हुरमत वाले जितने

महीने थे उनमें जारी रखते थे बल्कि उन महीनों में और हुरमत वाले महीनों के इज्तेमाओं और सफरों से लाभ उठाते हुए वह उन महीनों में अपनी फसाद फैलाने वाली उपद्रव संबंधी कार्यवाहियों में और भी अधिक तेज हो जाते थे और फिर अत्यंत अभद्रता से अपने दिल को झूठी तसल्ली देने के लिए वह इज्जत के महीनों को अपनी जगह से इधर उधर परिवर्तित कर देते थे जैसे वह नसिया के नाम से पुकारते थे। मुसलमानों के साथ तो उन्होंने फतह मक्का तक यही बर्ताव रखा है बल्कि हद कर दी है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि अल्लाह ने यह शब्द प्रयोग किए हैं कि उन्होंने तो गज़ब ही कर दिया है था कि सुलह हुदैबिया के ज़माने में बावजूद पक्के वादे के कुफ्फ़ार-ए-मक्का और उनके साथियों ने हरम के इलाके में मुसलमानों के एक हलीम क़बीले के विरुद्ध तलवार चलाई और फिर जब मुसलमान उस कबीले की हिमायत में निकले तो उनके विरुद्ध भी हरम के मध्य तलवार का प्रयोग किया। अत: इस जवाब से जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ में नाज़िल फरमाया मुसलमानों की संतुष्टि होनी ही थी। क़ुरैश भी कुछ ठंडे पड़ गए।

और इसी बीच उनके आदमी भी अपने दो क़ैदियों को छुड़ाने के लिए मदीना पहुँच गए जिन को वे लेकर आए थे। ये गए हुए मुसलमान थे जो पकड़ लिए गए थे लेकिन चूंकि अभी तक सअद बिन अबी वकास और उत्बा वापस नहीं आए थे जिन की ऊंटनी गुम हो गई थी वे वापस नहीं पहुंचे थे, उनसे मिल भी नहीं सके और आंहज़रत स।अ।व। को अत्यंत भय था इस बात का कि यदि वे क़ुरैश के हाथ चढ़ गए तो वे उन्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे। इसलिए आप ने उनकी वापसी तक क़ैदियों को छोड़ने से मना कर दिया। जब काफिर क़ैदियों को लेने आए तो आपने कहा कि जब तक हमारे आदमी नहीं आ जाते आपके क़ैदियों को नहीं छोडूंगा। इसलिए आपने इनकार कर दिया और फ़रमाया कि जब वे दोनों आ जाएँगे तो मैं तुम्हारे आदमियों को छोड़ दूंगा। अत: जब वे दोनों पहुँच गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन दो काफिरों को बन्दी बनाया था बदले में कुछ लेकर दोनों बन्दियों को छोड़ दिया। किन्तु उन बन्दियों में से एक व्यक्ति पर मदीने के निवास के समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर व्यवहार तथा इस्लाम की शिक्षा की सच्चाई का इतना प्रभाव हो चुका था कि उसने स्वतंत्र होकर भी वापस जाने से इंकार कर दिया और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर मुसलमान होकर आपके सहाबियों में शामिल हो गया तथा अन्तत: बेएर-ए-मऊना में शहीद हुआ, उसका नाम हकीम बिन कीसान था। (सीरत खतमुनबिय्यियीन पृष्ठ 330- 334) अगर अत्याचार द्वारा और बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाते तो इस प्रकार इस्लाम स्वीकार न किया जाता।

हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के बारे में यह भी आता है कि बद्र के युद्ध के दिन आप अपने वालिद से मुकाबले के लिए आगे बढ़े क्यूँकि उनके वालिद मुसलमान नहीं थे, काफिरों के साथ आए थे, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें रोक दिया और फरमाया कि उसे छोड़ दो, कोई और उसे मार देगा। अत: आपके वालिद, चचा और भाई तथा भतीजे सबकी हत्या हुई। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा ने बड़े धैर्य से काम लिया तथा अल्लाह की प्रसन्न्ता पर प्रसन्न रहते हुए अल्लाह तआला की उस सहायता पर आभारी हुए जो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में प्रकट की थी अर्थात विजय प्रदान की थी। (तस्बीत दलाइलुन्नबुव्वत अज़ अब्दुल जब्बार जिल्द 2 पृष्ठ 585, दारुल अरबिय्या बैरूत)

इस घटना के विषय में एक रिवायत यह भी मिलती है कि इब्ने अब्बास कहते हैं कि बद्र के युद्ध वाले दिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुममें से जिसका मुकाबला अब्बास से हो वह उसकी हत्या न करे क्यूँकि वे विवश होकर निकले हैं, बन्दी बना लेना, हत्या न करना। इस पर हज़रत अबू हुज़ैफ़ा ने, जब उनके पास यह बात पहुंची अपने साथी से कहा कि क्या हम अपने बापों, भाईयों तथा रिश्तेदारों की तो हत्या करें किन्तु अब्बास को छोड़ दें, यह क्या हुआ? ख़ुदा की कसम मैं अवश्य उन पर तलवार चलाऊँगा यदि मेरे सामने आए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक जब यह बात पहुंची तो आपने हज़रत उमर को फरमाया कि या अबा हफ्स! ऐ अबू हफ्स! रसूल-ए-ख़ुदा के चचा के चेहरे पर तलवार से वार किया जाएगा। हज़रत उमर ने पूछा कि या सूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे अनुमति दें कि मैं तलवार से उनकी गर्दन उड़ा दूँ, ख़ुदा की कसम उनमें पाखंड पाया जाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको उससे मना कर दिया। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बयान करते थे कि मैं उस बात के बुरे प्रभाव से जो उस दिन मैंने कही शांत नहीं रह सकता सिवाए इसके कि शहादत की मृत्यु उसके बुरे प्रभाव से मुझे दूर कर दे कि मैं इस्लाम की खातिर शहीद हूँ तभी मैं समझूंगा कि उसके बुरे परिणाम से सुरक्षित हो गया हूँ जो बात मैंने कही है। रावी बयान करते हैं कि अत: आपको यमामा के युद्ध के समय शहादत मिल गई।
(मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3, पृष्ठ 247-248 हदीस 4988, प्रकाशित दारुल कुतुब अल इल्मिया बैरूत 2002)

हज़रत आयशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुशरिकों के मृतकों को एक गढ़े में फेंकने का आदेश दिया, अत: उन्हें उसमें फेंक दिया गया तो हुज़ूर स।अ।व। ने उनके पास खड़े होकर फ़रमाया-कि हे कुँए वालो क्या तुमने उस वादे को सच्चा पाया जो तुम्हारे रब्ब ने तुमसे किया था अर्थात बुतों ने ? मैंने तो निस्संदेह उस वादे को सच्चा पाया जो मेरे रब्ब ने मुझसे किया था और अगर अल्लाह तआला से मुराद ली जाए तो वह वही थी कि तुम्हें सज़ा मिलेगी। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने तो उस वादे को सच्चा पाया जो अल्लाह तआला ने मुझसे किया था कि मैं उनको दंड दूंगा और तुझ पर विजयी नहीं हो सकेंगे इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल! क्या आप उन लोगों से संबोधित हैं जो मर चुके हैं आपने फरमाया निसंदेह यह जान चुके हैं कि तुम्हारे रब ने तुमसे जो वादा किया था वह सच्चा था।

जब आप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार उन को कुँए में फेंका तो हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के चेहरे से अप्रसन्नता प्रकट हुई क्यूँकि उनके वालिद को भी कुएँ में फेंका जा रहा था, आप सल्ल। ने उनसे फरमाया कि ऐ अबू हुज़ैफ़ा! ख़ुदा की सौगन्ध ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे तुम्हें अपने वालिद के साथ होने वाला व्यवहार बुरा लग रहा है। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा ने विनय पूर्वक कहा कि हे अल्लाह के रसूल! अल्लाह की कसम मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में कोई शंका नहीं परन्तु मेरे वालिद प्रतिष्ठित, सच्चे तथा विमर्श योग्य व्यक्ति थे किन्तु उसमें बुरी धारणा नहीं थी और मैं चाहता था कि अल्लाह उसकी मौत से पहले उसे इस्लाम की हिदायत दे दे परन्तु जब मैंने देखा कि ऐसा होना अब सम्भव नहीं रहा तथा उसका वह परिणाम हुआ जो उसका परिणाम होना था तो इस बात ने मुझे दुखी कर दिया। इस पर सूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए भलाई की दुआ फरमाई। (मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3, पृष्ठ 249 हदीस 4995, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बैरूत 2002)

हज़रत अबू हुज़ैफ़ा ने समस्त युद्धों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहने का सौभाग्य प्राप्त किया तथा हज़रत अबूबकर सिद्दीक की खिलाफत के दौर में तरेपन या चव्वन वर्ष की आयु में शहीद हुए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फरमाया- अब मैं हमारी जमाअत के एक पुराने खादिम-ए-सिलसिला व बुज़ुर्ग प्रो। सऊद अहमद खान साहब देहलवी का वर्णन करूँगा जिनका पिछले दिनों निधन हुआ है। आप 21 जनवरी को विधि के विधान अनुसार वफात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आपके वालिद हज़रत मुहम्मद हसन अहसान देहलवी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबियों में से थे। इसी प्रकार आपके दादा हज़रत महमूद हसन खान साहब पटियाला के अध्यापक भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने 313 सहाबियों की सूचि में 301 नम्बर पर आपका

नाम लिखा है कि 'मौलवी महमूद हसन खान साहिब अध्यापक पटियाला'। (ज़मीमा पुस्तक अंजाम आथमरूहानी ख़ज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 328)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक सिराज ए मुनीर में महमान खाना और चाय आदि के लिए चंदा की आमदनी की सूची" के शीर्षक के अंतर्गत उनका नाम यों लिखा है "मौलवी महमूद हसन खान साहिब पटियाला"। (सिराज ए मुनीर, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 85-86)

प्रो। सऊद खान साहब के वालिद हज़रत मुहम्मद हसन अहसन को दस बारह वर्ष की आयु में ख़ुत्ब-ए-इलहामिय: के अवसर पर क़ादियान जाकर उस महान निशान को स्वयं अपनी आँखों से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। (उद्धृत 'नई ज़िन्दगी', मसूद खान देहलवी पृष्ठ 107 प्रकाशक लज्ना इमाइल्लाह लाहौर 2007 ई०)

प्रो। सऊद खान साहब ने स्वयं को अप्रैल 1945 में वक्फ किया था। आप अलीगढ़ से फारसी में बी ए आनर्स थे आपके साथ आपके भाईयों का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने 1955 ई० में एक जुम्अ: के ख़ुत्ब: में फरमाया कि मैं समझता हूँ कि मास्टर मुहम्मद हसन अहसान साहब ने ऐसा नमूना दिखाया है जो प्रशंसनीय है। वे एक साधारण अध्यापक थे तथा एक निर्धन व्यक्ति थे उन्होंने भूखे रह कर अपनी संतान को पढ़ाया तथा उसे ग्रेजुएट कराया और फिर सात लड़कों में से चार लड़कों को सिलसिले के सुपुर्द कर दिया, अब वे चारों दीन की सेवा कर रहे हैं। और कई ईमानदारी के साथ काम कर रहे हैं जो कि वक़्फ़ होने का अधिकार है। आप कहते हैं, अगर ये बच्चे वक़्फ़ नहीं होते, तो वे सातों मिल कर शायद दस या बीस साल तक अपने बाप का नाम रौशन रखते और कहते कि हमारे पिता एक अच्छे आदमी थे, लेकिन जब मेरा यह ख़ुत्बा प्रकाशित होगा। «हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि० फरमाते हैं,» जब मेरा यह ख़ुत्बा प्रकाशित होगा तो लाखों अहमदी हसन आसान का नाम लेकर उनकी सराहना करेंगे और कहेंगे, «देखो, कैसा हिम्मत वाला व्यक्ति था कि उसने ग़रीब होते हुए भी अपने सातों बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाई और फिर उनमे से चार को जमाअत के सुपुर्द कर दिया अर्थात वक़्फ़ कर दिया। और फिर वे बच्चे भी ऐसे नेक साबित हुए कि उन्होंने खुशी अपने पिता के बलिदान को स्वीकार किया और अपनी ओर से भी उनके निर्णय पर खुश कर दिया। (मसूद हसन खान देहली, द्वारा लिखित 'नई ज़िन्दगी' पृष्ठ 208, प्रकाशक लज्ना इमाउल्लाह, लाहौर 2007)

जून 1946 से अक्टूबर 1949 तक सऊद खान इस्लामिक हाई स्कूल कादियान में पढ़ाते रहे थे। अक्टूबर 1949 में कुछ महीनों के लिए जामिया अहमदिया में अंग्रेज़ी के प्रोफेसर के रूप में काम किया। हज़रत ख़लीफा सानी रज़ि० ने आपको 1950 में गैर-मुस्लिम देशों में भेजा। (तारीख़ ए अह्मदियत, जिल्द 14, पृष्ठ 286)

आप अहमदी माध्यमिक विद्यालय घाना के पहले उपाध्यक्ष थे। इसके लिए, 30 अप्रैल 1950 को आपने कराची को छोड़ दिया 30 जून को कमासी पहुँच गए। अर्थात मई और जून दो महीने में यह यात्रा की। (आज हम पांच - छ घंटे तक पहुंच जाते हैं) और 1 जुलाई से अहमदिया माध्यमिक विद्यालय कमासी में पढ़ाना शुरू किया। (मसूद हसन खान देहली द्वारा लिखित 'नई ज़िन्दगी' पृष्ठ 277-276, प्रकाशक लज्ना इमाउल्लाह, लाहौर 2007)

उनका जो सफर था उसमें इतनी देर क्यों लगी इसके बारे में उनके भतीजे इरफान खान लिखकर कहते हैं कि आप अपनी पहली नियुक्ति पर रब्वा से घाना रवाना हुए और 3 महीने के अत्यंत कष्टदायक सफ़र (यह लगभग 2 महीने बनते हैं) के बाद कमासी पहुंचे, उस ज़माने में समुद्री जहाज़ बदल-बदल कर सफर पूरा किया जाता था, हवाई जहाज़ से नहीं बल्कि समुद्री जहाज़ से जाते थे। अत: आप भी कराची से अदन के लिए रवाना हुए। 160 रुपए में बगैर खाना वाला टिकट हासिल किया और अदन से घाना तक आपने समुद्री जहाज़ के अतिरिक्त बसों और ट्रकों और हवाई जहाज़ के द्वारा नाइजीरिया तक सफर किया। नाइजीरिया के हवाई जहाज़ की 55 पाउंड की टिकट खरीदने के लिए आपने अपना ट्रंक और दूसरी चीजें बेच दी और अपना व्यक्तिगत सामान एक चादर में बांध लिया। फिर नाइजीरिया मिशन हाउस ने आपको घाना तक का बस का टिकट दिया। 1950 में नाइजीरिया पहुंचे। वहां पहुंचने के लिए कुछ रास्ता हवाई जहाज़ का सफर किया। और वह आपने अपना सामान बेचकर किया। आगे फिर नाइजीरिया से घाना तक बस के द्वारा रवाना किया गया। 1950 ईस्वी में पश्चिमी और पूर्वी अफ्रीका और हॉलैंड के लिए 8 लोगों की रवानगी के बारे में तारीख अहमदियत में आपका नाम सबसे ऊपर है और वहां नंबर एक पर लिखा है कि सऊद अहमद खान साहब। (घाना के लिए रवानगी लाहौर से, 25 अमान 1329 हिजरी। (उद्धृत तारीख अह्मदियत जिल्द 14 पृष्ठ 286)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रजि अल्लाह तआला अन्हो के आदेश पर 1958 में पाकिस्तान आए और पंजाब यूनिवर्सिटी से इतिहास में m ।a। किया, इतिहास में एम ए थे जो उन्होंने बाद में किया। इस दौरान आपके पिता मोहतरम मोहम्मद हसन आसान देहलवी साहेब का अगस्त 1955 में देहांत हो गया। जब आप घाना ही थे तो उनके पिता मृत्यु को प्राप्त हो गए। 1961 में वापस घाना आप की नियुक्ति हुई जहां आपको फिर भरपूर तरीके से 1968 तक धार्मिक सेवाएं करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहिमहुल्लाह तआला की मंजूरी से हुज़ूर के यूरोप के सफर के दौरान मस्जिद मुबारक रब्वा में बाद नमाज़ मगरिब एक मज्लिस 'तल्कीन अमल' की नियुक्ति हुई जिसमें प्रतिदिन 15 मिनट आपकी तरबियती तक़रीर हुआ करती थी। इस प्रोग्राम का आरंभ 7 जुलाई से हुआ और यह अत्यंत दिलचस्पी से सुना जाता था और ज्ञानवर्धक सभा होती थी। इस सभा में जिन बुज़ुर्ग उलमा की तक़रीर हुई उनमें आप भी सम्मिलित थे। (उद्धृत तारीख़ अह्मदियत जिल्द 24 पृष्ठ 392-393)

जलसा सालाना के अवसर पर तक़रीरों के अनुवाद का प्रबंध हुआ तो आपको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहिमहुल्लाह तआला की तक़रीर का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने का सौभाग्य का था और रब्वा के अंतिम जलसे तक आप इस ड्यूटी को करते रहे। प्रोफ़ेसर सऊद खान साहब के विद्यार्थियों में मुकर्रम अब्दुल वहाब आदम साहब गाना और भी के आडो साहब जो यहां रहे हैं, यह सम्मिलित थे। 1968 में पाकिस्तान वापस आने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहिमहुल्लाह ने प्रोफ़ेसर सऊद खान साहब को जामिया अहमदिया में एक साल के लिए अंग्रेज़ी के अध्यापक ने किया। जब आपकी नियुक्ति जामिया अहमदिया में हुई तो उस समय भी आप तालीम उल इस्लाम कॉलेज में प्रोफ़ेसर के रूप में सेवा कर रहे थे। अत: 2 मार्च 1987 को अपने जामिया अहमदिया में ड्यूटी का आरंभ किया और एक साल तक सेवा को निरंतर करते रहे।

प्रोफ़ेसर सऊद खान साहब के बारे में आपके बड़े भाई मसूद खान देहलवी साहिब जो अलफज़ल के एडिटर भी रहे हैं कुछ ही साल हुए उनका देहांत हुआ, यह कहा करते थे हमारे भाई सऊद अहमद मोबाइल लाइब्रेरी हैं, बहुत विद्वान आदमी थे। आपकी बेटी राशिदा साहिबा लिखती हैं कि मेरे पिता बहुत ही नरम और विनम्र स्वभाव के मालिक थे, अत्यंत इबादत करने वाले थे, तहज्जुद पढ़ने वाले थे बहुत ही अथिति सत्कार करने वाले और विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे और सच्चाई है जो कुछ उन्होंने लिखा है वह ऐसे ही थे।

उनके भतीजे नफीस अहमद अतीक जो जमाअत के मुबल्लिग़ हैं, कहते हैं कि बहुत ही विनम्र स्वभाव के मालिक थे, संयमी थे, अल्लाह पर भरोसा करने वाले एक नेक और सादा तबीयत के मालिक थे, आप की वफ़ा और जमाअत की सेवा की भावना सब वाकिफीन जिंदगी के लिए एक आदर्श का रंग रखती है। यह लिखते हैं एक बार खाकसार को कहा कि लिबास और अन्य सहूलियत को आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए, फ़ेशन और बनावट और दिखावा वाकिफीन जिंदगी को शोभा नहीं देता। आपकी जिंदगी में हया का पहलू भी बहुत नुमाया था।

सऊद खान साहब के शिष्य I K Gyasi साहब यह गाना के रहने वाले

हैं, लिखते हैं सऊद साहब 1950 से 55 तक तालीम उल इस्लाम सेकेंडरी स्कूल कमासी के बिल्कुल प्रारंभिक असिस्टेंट हेडमास्टर या वाइस प्रिंसपल थे और डाक्टर एस बी अहमद साहब उसके पहले हेडमास्टर थे। और सऊद साहिब अंग्रेज़ी भाषा, अंग्रेज़ी इतिहास और यूरोपियन इतिहास के अत्यंत परिश्रमी और प्रकांड विद्वान थे, यह उनको पढ़ाया करते थे फिर घाना के रहने वाले दोस्त लिखते हैं कि जहां तक उनकी अंग्रेज़ी व्याकरण विशेष रुप से वाक्यों के चयन का संबंध है तो उसमें आप जैसा मैंने कोई नहीं देखा और कहते हैं कि मेरी भाषा को बेहतर बनाने में उनकि महत्वपूर्ण भूमिका है।

सऊद खान साहब का छात्र आया था। I K Gyasi साहिब ये हैं घानियन हैं, लिखते हैं कि सऊद साहिब 1950 से 55 तालीमुल इस्लाम सेकेंडरी स्कूल के सबसे पहले सहायक हेडमास्टर थे या डिप्टी प्रिंसिपल और डॉ एस बी अहमद उनके पहले हेडमास्टर थे। और सऊद साहिब अंग्रेज़ी, अंग्रेज़ी इतिहास और यूरोपीय इतिहास के अत्यंत परिश्रमी और प्रसिद्ध विद्वान था। वे उन्हें पढ़ाते थे। तब घनिन दोस्त लिखते हैं कि जहां तक उनका अंग्रेज़ी व्याकरण विशेष रूप से विश्लेषण से संबंधित है, मैं आपके जैसे किसी को नहीं देखता और कहता हूं कि मेरी भाषा को बेहतर बनाने में उनकी बहुत भूमिका थी।

जामिया अहमदिया सीनियर सेक्शन के प्रिंसिपल मुबश्शिर अयाज़ साहब लिखते हैं कि प्रोफेसर सऊद खान साहिब एक बहुत ही विनम्र स्वभाव के मालिक और जमाअत के विद्वान थे। जामिया अहमदिया में उनके अध्यापन के दौरान हम भी छात्र थे। और जामिया के अंतिम वर्ष तक, हमेशा कक्षा में समय से आते और पीरियड के अंतिम मिनट तक पढ़ाते रहते। छात्रों का कभी-कभी यह प्रयत्न होता था कि उन्हें इधर उधर की बातों में लगा लें और पढ़ाई न हो, लेकिन आप सख्ती करने या डॉट-डपट का एक बड़े अच्छे तरीके से इस बात को टाल जाते थे और पढ़ाई जारी रखते थे। लिखते हैं कि मैंने एक बात नोट की आपकी नज़र में वाक्फीन ए ज़िन्दगी का बहुत सम्मान था, अगर किसी को किसी चीज़ के लिए समझाना भी होता तो उसके आत्मसम्मान का भी पूरा ख्याल रखते थे। फिर लिखते हैं कि जब एम टी ए के शुरुआती समय में विभिन्न कार्यक्रमों को रिकॉर्ड किया गया था, तो सऊद खान साहिब ने सीरतुन्नबी के प्रोग्राम रिकॉर्ड करवाए। आप बुढ़ापे की आयु में थे लेकिन सभी कार्यक्रमों को बड़ी महनत से स्वयं तैयार करते और हमारे मध्य प्रश्न वितरित करके देते, सभी प्रश्न स्वयं अपने हाथ से लिख कर देते।

कहते हैं कि कभी-कभी माहौल गरम ठंडा भी हो जाता था, प्रोग्राम बनते हुए बहस हो जाती थी कि उसको इस प्रकार नहीं करना है इस प्रकार करना है लेकिन ऐसे दयालु और विनम्र व्यक्ति थे कि उनके माथे पर कभी बल नहीं आता था ऐसा लगता था कि उनके कान में कोई कड़वी बात पड़ी ही नहीं और अगर किसी दूसरे ने कर दी है तो हल्की मुस्कान के साथ जहाँ से प्रोग्राम रिकॉर्डिंग रुकी होती थी उसको फिर वहां से शुरू करवा देते थे,

प्रोफेसर सऊद खान की मृत्यु के बाद, उनके पड़ोसी फ़ज़ल इलाही मलिक साहब ने बड़े फूट फूट कर रोते हुए कहा कि ऐसे पड़ोसी हर एक को नहीं मिलते। बहुत ही साधारण स्वभाव के मालिक और विद्वान थे।

उनके वंशजों में एक बेटी और दो बेटे यादगार हैं। आप के एक पुत्र सअद सऊद ब्रिटेन में एक जमाअत के सदर के तौर में सेवा कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनके दरजात बुलंद फरमाए। वास्तव में, उनके बारे में जो लिखा गया है जैसा कि पहले भी मैंने कहा कि उनके गुण उससे बहुत अधिक थे। ख़िलाफ़त के साथ अत्यंत प्रेम और आज्ञाकारिता का संबंध था। अल्लाह तआला उनके वंशजों और पीढ़ियों को ख़िलाफ़त और जमाअत के साथ हमेशा जोड़ कर रखे और उनके दरजात बुलंद फरमाता चला जाए। नमाज़ के बाद, मैं उनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पंजतन मुबश्शर संतान की शुभचर्चा करते हुए जलसा में सम्मिलित महिलाओं को उनकी विशेषताओं से अवगत कराया। फिर दुआ के साथ जलसा समापन हुआ।

नज़ामतें व क़यामगाहें

इस साल जलसा सालाना क़ादियान के प्रबन्ध और मेहमानों के ठहरने, खाने पीने एवं अन्य आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए 31 नज़ामतें और 25 क़यामगाहें बनायी गयीं और 4 लंगरखाने जारी किए गए। क़ादियान के सारे हल्क़ों में ठहरने वाले मेहमानों के लिए 7 स्थानों पर फ़ैमलीज़ के तहत भोजन वितरण का प्रबन्ध किया गया। इस वर्ष तालीमुल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल के प्रांगण में तीन बड़े- बड़े वाटरप्रूफ अस्थाई हाल बनाए गए। जिनके फ़र्श का निर्माण इस तरह किया गया कि वर्षा होने पर मेहमानों को कोई परेशानी न हो। उनमें बिछाने के लिए फोम के 2000 उच्चकोटि के गद्दे ख़रीदे गए। उनमें लगभग 2000 मेहमानों को ठहराया गया और उनकी सहूलत के लिए 50 अस्थाई शौचालय बनवाए गए। जिनमें हर समय गर्म पानी की व्यवस्था मौजूद रही।

नज़ामत ख़िदमत-ए-ख़ल्क़

जलसा सालाना क़ादियान के विभागों में से एक महत्त्वपूर्ण विभाग नज़ामत ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ है। जिसके अन्तर्गत शान्ति और सुरक्षा सम्बन्धी ड्यूटियाँ दी जाती हैं। इस वर्ष इस विभाग के अन्तर्गत ड्यूटी देने के लिए भारत के कोने-कोने से लगभग 688 ख़ुद्दाम और दूसरे स्तर के 29 अन्सार आए। इस विभाग द्वारा जलसा सालाना में शामिल होने वाले हर मेहमान को फोटो और विशेष बारकोड के साथ जलसा रजिस्ट्रेशन कार्ड उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त ख़ुद्दाम और अन्सार ने जलसा सालाना में आवश्यकतानुसार हर जगह ड्यूटियाँ दीं।

नज़ामत तरबियत

इस नज़ामत के अन्तर्गत जलसा सालाना क़ादियान के दिनों में 22 दिसम्बर 2018 से 02जनवरी 2019 तक मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक़्सा, मस्जिद अनवार में बाजमाअत तहज्जुद की नमाज़ का प्रबन्ध किया गया। इसके अतिरिक्त 09 स्थानीय मस्जिदों में भी जलसा सालाना के तीनों दिन बाजमाअत तहज्जुद की नमाज़ का प्रबन्ध किया गया। नमाज़ों का मन्ज़र देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह शैर सहसा मुँह पर जारी हो जाता:-

चल रही है नसीम रहमत की

जो दुआ कीजिए क़ुबूल है आज

इसके अतिरिक्त सभी मस्जिदों में नमाज़ फ़ज्र के बाद तफ़्सीर कबीर के दर्स का प्रबन्ध किया गया। इस विभाग द्वारा तहज्जुद की नमाज़ के लिए लोगों को जगाने और विभिन्न स्थानों पर तालीमी व तरबियती बैनर लगाने का प्रबन्ध किया गया और जलसा सालाना के प्रोग्राम का उर्दू और अंग्रेज़ी में पम्फलेट प्रकाशित किया गया। जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला के क़ीमती उपदेश क़लमबद्ध थे।

बैतुद्दुआ में नफ़्ल नमाज़ों की अदायगी और पवित्र स्थलों का दर्शन

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भारत एवं अन्य देशों से आए हुए मेहमानों के लिए बैतुद्दुआ में नवाफ़िल की अदायगी का विधिवत प्रबन्ध किया गया था। मेहमान पूरे शौक़ से बैतुद्दुआ में नवाफ़िल की अदायगी के लिए देर तक लम्बी-लम्बी लाइनों में ज़िकरे इलाही और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए अपनी अपनी बारी का इन्तिज़ार करते। इसी तरह मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक़्सा, मीनारतुल मसीह, अद्दार (दारुल मसीह), बहिश्ती मक़बरा और मस्जिद अनवार इत्यादि पवित्र स्थलों का मेहमानों ने बड़े शौक़ से दर्शन किया। विशेष रूप से दारुल मसीह में मौजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत अम्मा जान रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की यादगारों का मेहमानों ने बड़े शौक़ से दर्शन किया। विशेष रूप से दारुल मसीह में मौजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत अम्मा जान रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की यादगारों का मेहमानों ने बड़े शौक़ से दर्शन किया। बैतुद्दुआ में नवाफ़िल की अदायगी और दारुल

मसीह की ज़ियारत के लिए स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग समय मुक़र्रर थे। हुज़ूरे अनवर के आदेशानुसार लंगरख़ानों और अधिक व्यस्त क़यामगाहों में ड्यूटी देने वालों के लिए बाजमाअत नमाज़ का इन्तिज़ाम किया गया।

जलसा के दिनों में हुज़ूरे अनवर का लाइव ख़ुत्बा जुमा देखने और सुनने के लिए क़ादियान की सारी मस्जिदों में प्रबन्ध किया गया। 28 दिसम्बर का ख़ुत्बा जुमा मस्जिद अनवार में पुरुषों के लिए और सरॉय ताहिर में स्त्रियों के लिए प्रोजेक्टर के द्वारा दिखाने का प्रबन्ध किया गया।

नज़ामत तर्जुमानी

इस वर्ष जलसा सालाना क़ादियान 2018 ई. के अवसर पर जलसा की तक़रीरों एवं अन्य कार्यवाहियों का अरबी, रशियन, इण्डोनेशियन, अंग्रेज़ी, मलयालम, तमिल, तेलगू, बँग्ला, कन्नड़ आदि भाषाओं में सीदे अनुवाद प्रसारण का प्रबन्ध था। हुज़ूरे अनवर के समापन भाषण का अनुवाद भी उपरोक्त भाषाओं में प्रसारित किया गया। महिला जलसा गाह में भी अंग्रेज़ी, अरबी, इण्डोनेशियन, मलयालम और बँग्ला आदि में अनुवाद प्रसारित करने का प्रबन्ध किया गया।

निकाहों की घोषणा

जमाअत के लोगों की यह इच्छा होती है कि उनके बच्चों का निकाह क़ादियान में पढ़ा जाय और उसकी घोषणा भी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम की पवित्र बस्ती में ही हो। अत: इस वर्ष जलसा सालाना के अवसर पर 29 दिसम्बर 2018 ई. को मुकर्रम मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब नासिर नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया क़ादियान ने मस्जिद दारुल अनवार में 22 निकाहों की घोषणा की। इस अवसर पर उन्होंने मसनून आयतों की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर के शादी-विवाह से सम्बन्धित क़ीमती उपदेश पढ़कर सुनाए। इसके उपरान्त बाद में भी 11 निकाहों की घोषणा हुई।

नुमाइश (प्रदर्शनियाँ)

प्रदर्शिनी- इस्लाम और अमने आलम

हुज़ूरे अनवर की अनुमति से कोठी दारुस्सलाम में स्थित स्व. हज़रत नवाब मुहम्मद अली खाँ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के मकान में यह प्रदर्शनी आयोजित की गई. जिसका शुभारम्भ 22दिसम्बर सन् 2018 ई. को एड़ीशनल नाज़िर आला जुनूबी हिन्द ने दुआओं के साथ किया। इस प्रदर्शनी में इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार संसार में अमन चैन की स्थापना के सन्दर्भ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और इमाम जमाअत अहमदिया की वैश्विक अमन चैन की कोशिशों से सम्बन्धित उपदेश आकर्षक ----के रूप में जगह- जगह लगाए गए। यह प्रदर्शनी 23 दिसम्बर 2018 से लेकर 05 जनवरी 2019 तक प्रतिदिन प्रात: 9 बजे से रात 9 बजे तक खुलती रही। जिसका 20 देशों के लोगों ने अवलोकन किया। जिनकी संख्या 4142 थी। जिनमें 624 लोगों ने अपने विचार क़लमबद्द किए। पाठकों की दिलचस्पी के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:-

★मोहतरमा डॉ. नसीरा नुज़हत साहिबा आफ पाकिस्तान लिखती हैं कि:- बहुत अच्छी प्रदर्शनी है इससे जमाअत की महान तरक़्क़ियों का पता चलता है।

★मुकर्रम अज़ीज़ुल्लाह साहिब आफ रब्वा (पाकिस्तान) ने लिखा कि:-अल्लाह तआला से दुआ है कि ऐसी प्रदर्शिनी हर जगह पर मौजूद हो और हर अहमदी को यह प्रदर्शिनी देखने का अवसर मिले।

★मुकर्रम तहसीन इक़्बाल साहिब (पाकिस्तान) ने लिखा कि:- माशाअल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, बहुत आकर्षक थी, चित्रों के रूप में एक झलक थी। मानो सागर को गागर में बन्द करना है।

★आदरणीय कैसर सलीम साहिब (कैनेडा) लिखते हैं : माशाअल्लाह उच्च रूप से ख़िलाफ़त की बरकतों और फ़ज़्लों को शांति के प्रयासों के साथ व्यक्त किया गया है।

★आदरणीय मुहसिन निसार साहिब (पाकिस्तान) लिखते हैं : थोड़े से समय में अत्यंत निचोड़ द्वारा लाभदायक शिक्षाओं को प्रस्तुत किया गया है। ऐसी आकर्षक प्रदर्शनी पर नि:संदेह आयोजकों के लिए दिल से दुआ निकलती है।

★आदरणीय फ़हीम अहमद नूर साहिब (कर्नाटक, इण्डिया) ने लिखा : प्रदर्शनी की जितनी प्रशंसा की जाए कम है।

★आदरणीय आसमा उरूस साहिबा (पाकिस्तान) लिखती हैं : मेरे जीवन की सबसे अनोखी और यादगार प्रदर्शनी।

★आदरणीय नाज़िमतुन्निसा साहिबा (अबू धाबी) लिखती हैं : Great ,Excellent and nice

अन्नूर नुमाइश कोठी दारुल सलाम :

इस प्रदर्शनी में जमाअत अहमदिया के इतिहास के विभिन्न युगों को तस्वीरों एवं पोस्टरों के द्वारा दिखाया गया है। वैसे तो यह प्रदर्शनी साल भर खुली रहती है किन्तु जलसा सालाना के अवसर पर आगंतुकों के लिए विशेष सहुलतों का प्रबंध किया जाता है। आगंतुकों के बैठने के लिए कुर्सियां एवं टैबल और पीने के लिए पानी की व्यवस्था की गयी थी। इसी प्रकार आगुन्तकों की इंट्री एवं प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने के लिए दो रिजिस्टर रखे गए थे। चार हज़ार से अधिक लोगों ने प्रदर्शनी की ज़ियारत की। 570 आगुन्तकों ने प्रदर्शनी की ज़ियारत के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं जिनमें से कुछ प्रतिक्रियाएं निम्नलिखित हैं।

(1) इस प्रदर्शनी से जमाअती इतिहास का संक्षिप्त एवं शानदार परिचय प्राप्त होता है। और ख़लीफ़ा-ए-वक्त (अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़) की दूरदर्शिता का अंदाज़ा होता है। (आदरणीय अब्दुल वासे जमाअत अहमदिया सूंघड़ा राज्य ओड़िशा ,इण्डिया)

(2) इस प्रकार कि प्रदर्शनी का आयोजन करना नि:संदेह नई पीढ़ी के लिए ज्ञान एवं इरफ़ान में वृद्धि का उद्भव है। खाकसार फ़ैमिली के साथ यहाँ आया और ज्ञान एवं इरफ़ान में बहुत वृद्धि हुई। (आदरणीय मुहम्मद रज़ाउल्लाह ,चकवाल, पाकिस्तान)

(3)अल्हम्दोल्लिल्लाह,अत्यंत उच्च प्रयास है और संक्षिप्त रूप से जमाअत की तारीख़ को एकत्रित कर दिया गया है, अल्लाह तआला प्रयास करने वालों को उच्च प्रतिफ़ल प्रदान करे। (आदरणीय नसीम अहमद साहिब, रब्वाह)

मख़ज़न-ए-तसावीर एवं क़ुरआन नुमाइश :

नज़ारत नश्रो इशाअत के अंतर्गत नश्रो इशाअत कि बिल्डिंग के भीतर ही क़ुरआन नुमाइश एवं मख़ज़न-ए-तसावीर का विभाग स्थापित है। मख़ज़न-ए-तसावीर को 6 हज़ार से अधिक आगंतुकों ने विज़िट किया और 100 से अधिक लोगों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं। क़ुरआन नुमाइश को भी 6 हज़ार से अधिक आगंतुकों ने विज़िट किया जिसमें 18 देशों के प्रतिनिधि शामिल थे। 247 लोगों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं।

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट प्रदर्शनी :

जलसा सालाना कादियान 2018 ई. के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिन्स्रेहिल अज़ीज़ की अनुमति से ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट इण्डिया द्वारा अहमदिया मरकज़ी लाईब्रेरी कादियान के हाल में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पिछले तीन वर्षों में ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट द्वारा इण्डिया के विभिन्न राज्यों में कल्याण हेतु किए गए कार्यों को तस्वीरों के द्वारा दिखाया गया। इसी अवसर पर ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट इण्डिया द्वारा मानवता की सेवा हेतु कार्यों पर एक विशेष डाक्यूमेंट्री भी दिखाई जाती रही। इसी प्रकार ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट इण्डिया कि ओर से तैयार कि गईं कुछ विभिन्न वस्तुएं उदाहरणतया पैन, चाबी के छल्ले, काफ़ी मग, इत्यादि बेचने के उद्देश्य से रखे गए थे। जलसा सालाना के अवसर पर यह प्रदर्शनी तिथि 22 दिसम्बर से 4 जनवरी 2019ई. तक चली। लगभग 6-7 हज़ार लोगों ने इस प्रदर्शनी को विज़िट किया। प्रदर्शनी में विज़िटर बुक भी रखी गयी थी जिसमें आगुंतकों ने अपनी प्रतिक्रियाएं भी व्यक्त कीं। अल्लाह तआला की कृपा से ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट इण्डिया की इस प्रदर्शनी को काफ़ी पसंद किया गया। ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट इण्डिया हिंदुस्तान के अत्यंत दूर से दूर स्थानों पर नि:शुल्क मैडिकल शिविर, नि:शुल्क रक्तदान शिविर, ग़रीबों की सहायता, विद्यार्थियों की शिक्षा, पीने योग्य पानी का प्रबंध करने के अन्यथा प्राकृतिक आपदाओं के समय अतिशीघ्र राहत पहुँचाने की तौफ़ीक प्राप्त कर रही है। जलसा सालाना कादियान 2018 ई. के अवसर जलसा गाह के एक भाग में ह्यूमैनीटी फ़र्स्ट इण्डिया के परिचय पर आधारित एक स्टाल लगाया गया था जिसे 4 से 5 हज़ार लोगों विज़िट किया।

एम.टी.ए द्वारा "इस्मऊ सौतस्समा" अरबी प्रोग्राम का सीधा प्रसारण :

तिथि19 दिसम्बर से 21 दिसम्बर 2018 ई.क़ादियान दारुल अमान से तीन दिवसीय अरबी प्रोग्राम "इस्मऊ सौतअस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह" का

एम.टी.ए के लिए सीधा प्रसारण हुआ। अल्हम्दोल्लिल्लाह अला ज़ालिक। इस प्रोग्राम में भाग लेने के लिए अरब देशों से अतिथि गण क़ादियान आए हुए थे। प्रोग्राम में सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी पर आधारित विभिन्न ईमान वर्धक घटनाओं के विषय पर वृतांत हुआ। क़ादियान की पवित्र एवं पावन भूमि पर अवतरित होने वाले ईमान वर्धक निशानों एवं ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित वीडियो रिकार्डिंग्स प्रोग्रामों के मध्यांतर में दर्शकों के लिए समय समय पर प्रसारित की जाती रहीं। इस प्रोग्राम को अरब देशों में अधिकता से देखा गया।

अफ़्रीक़ा के लिए "The Messiah of the Age" के शीर्षक पर आधारित प्रोग्राम का सीधा प्रसारण :

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तिथि 3 जनवरी से 5 जनवरी 2019 ई. एम.टी.ए इंटरनेशनल क़ादियान के स्टूडियो से "The Messiah of the Age" के शीर्षक पर आधारित अफ़्रीक़न देशों के लिए प्रोग्राम का सीधा प्रसारण किया गया। प्रोग्राम की अवधि एक घंटा पर निर्धारित थी यह प्रोग्राम अंग्रेज़ी भाषा पर आधारित था इस प्रोग्राम में भाग लेने के लिए अफ़्रीक़ी देशों से अतिथि गण क़ादियान आए। इस तीन दिवसीय प्रोग्राम में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बचपन और जीवनी के विभिन्न पहलुओं पर एवं आपकी दुआओं का वृत्तान्त किया गया। इसी प्रकार जलसा सालाना क़ादियान का परिचय एवं उसका ऐतिहासिक दृष्टिकोण , क़ादियान दारुल अमान के पवित्र स्थलों और उनमें अवतरित होने वाली ईमान वर्धक घटनाओं, इसी प्रकार तीसरे दिन ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की बरकतों एवं ख़िलाफ़त-ए-खामिसा के बाबरकत समय में विश्व भर में शांति स्थापना हेतू किए जाने वाले प्रयासों का वृत्तान्त किया गया। प्रोग्राम के मध्यांतर में निम्नलिखित संक्षिप्त डॉक्यूमेंट्रीज़ दिखाई गईं।

★क़ादियान के पवित्र स्थलों का संक्षिप्त परिचय। ★जलसा सालाना क़ादियान की तैयारीयां एवं प्रबंध और जलसा सालाना क़ादियान में सम्मिलित होने वाले अफ़्रीकी श्रधालुओं की प्रतिक्रियाएं। ★हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी की घटनाओं को इन्टरव्यूज़ के रूप में प्रस्तुत किया गया। कुछ नए अहमदियों के द्वारा अहमदियत क़ुबूल करने की घटनाएँ। वास्तविक इस्लामी ख़िलाफ़त के परिचय पर आधारित वीडियोज़। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की बरकतें एवं विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया की तरक्की। क़सीदह (आँहज़रत सल्लाहो अलैहि वस्सलम की प्रशंसा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा अरबी भाषा में रचित काव्य पंक्तियाँ)

प्रेस एवं मीडिया :

जलसा सालाना क़ादियान 2018 ई. के अवसर पर प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा विस्तृत रूप से इस्लाम की शांति प्रिय शिक्षाओं का प्रचार किया गया। जलसा गाह में बहुत ही आकर्षक मीडिया सैंटर बनाया गया जिसमें शन्ति की स्थापना हेतु हुज़ूर अनवर के विभिन्न आदेशों को लगाया गया और वहीं पर मीडियाकर्मियों को बिठा कर जमाअत एवं जलसा सालाना के संबंध में जानकारी प्रदान की गईं । अल्लाह तआला की कृपा से जलसा सालाना के अवसर पर विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया के 56 मीडियाकर्मी क़ादियान आए। जलसा सालाना के संबंध में हिन्दुस्तान के 6 विभिन्न राज्यों की 25 अख़बारों में 52 ख़बरें प्रकाशित हुईं। जलसा सालाना के संबंध में 11 विभिन्न चैनलों पर प्रकाशित हुईं जिनकी कुल अवधि 1 घंटा 57 सैकंड है। इनके अन्यथा जलसा सालाना की ख़बरें 5 विभिन्न इन्टरनेट पोर्टल्स पर प्रसारित हुईं और शोशल मीडिया में 118 पोस्ट जलसा सालाना के संबंध में प्रसारित की गईं। अल्लाह तआला समस्त सेवा करने वालों को जिन्होंने कठिन परिश्रम एवं वफ़ा के साथ इन कार्यों को पूर्ण किया है और इसी प्रकार श्रद्धालु जो दूर देशों से अत्यंत कठिनाईयाँ एवं बोझ उठाते हुए जलसा में शामिल हुए , सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का भागी बनाये जो आपने जलसा में उपस्थित होने वालों के संबंध में की हैं।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 12 का शेष

जो यहाँ अमीर हैं, उनके भी निकट था। यह निकटता ऐसी थी जैसे मैं स्वर्ग में हूँ। उस निकटता में बहुत प्रताप तथा दृढ़ता थी। हुज़ूर के संवाद का ढंग ऐसा सुखद है कि प्रत्येक शब्द आत्मा में उतरता प्रतीत होता है। मुझे यह भी अवसर मिला कि मैं हुज़ूर से संक्षिप्त बात कर सकूँ। मैंने हुज़ूर को बताया कि मैं कबाबीर भी गया हूँ और वहां पर भी हीफा में जमाअत की मस्जिद देखी है तथा अहमदिया जमाअत से मिला हूँ। यह मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था। मैं जर्मन साहित्य का प्रोफेसर हूँ। मैंने हुज़ूर से इस इच्छा को व्यक्त किया है कि मैं हुज़ूर के अगले जर्मनी के जलसे में भी सम्मिलित होना चाहता हूँ। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई जब हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं आवश्य सम्मिलित हूँ। मुझे भावुक रूप से इस संक्षिप्त वार्तआलाप ने बहुत प्रभावित किया है। मुझे यहाँ आकर बहुत प्रसन्नता हुई।

हुज़ूर अनवर ने जो पड़ोसी की परिभाषा की है मुझे यह बहुत अच्छा लगा है। मेरी यूनिवर्सिटी यहाँ से एक मील की दुरी पर है। मेरे लिए यह बहुत आश्चर्यजनक था कि यूनिवर्सिटी के प्रेज़िडेंट ने अपना संदेश भिजवाते हुए कहा कि अब हम पड़ोसी हैं, आइए हम मिल कर छात्रों तथा फिलाडेल्फिया के लोगों की एकता के लिए कार्य करें। जब हुज़ूर ने यही लेख वर्णित किया तो मुझे समझ आई कि यही वास्तविकता है और एक दूसरे से संपर्क रखने से क्या मुराद है। हुज़ूर अनवर ने जो इस शहर के लोगों के लिए नेक इच्छाओं का प्रदर्शन किया है उनका संबंध अब से नहीं अपितु आने वाले समय से है। एक चीज़ जो मैंने हुज़ूर अनवर में देखी है वह यह है कि वह केवल वर्तमान समय की बात नहीं कर रहे होते, अपितु उनकी दृष्टि आने वाले समय पर होती है । उन्होंने आने वाले समय तक भी फिलाडेल्फिया के लिए बरकतें छोड़ी हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि हुज़ूर अनवर ने यहाँ एक बीज बो दिया है, अब यह हमारा काम है कि इसकी निगरानी करें और इसे बढ़ाएं और इसको भाई चारे तथा प्रेम के मज़बूत वृक्ष में परिवर्तित करें।

★ एक महिला ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा : हुज़ूर अनवर ने जो फ़रमाया है कि हम आप लोगों के आंसू पोछेंगे। कितने लोग हैं जो यह कहते हैं। यह बहुत आश्चर्यजनक था। मैं अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सकी। अपना संदेश देने के लिए आवश्यक नहीं है कि उच्च तथा जोशीले भाषण हों, वह संदेश आप ने बहुत ही प्रेम और प्यारे अंदाज़ में दे दिया। आप की उपस्थिति ही अद्भुत प्रभाव रखती है। कम से कम मेरे लिए तो आप की उपस्थिति ही काफी है। आप की ख़ामोश उपस्थिति सब कुछ कह देती है और यह ख़ामोशी जोशीले भाषण से बहुत अधिक प्रभाव रखने वाली है। यह उपस्थिति बहुत शांति से भरी हुई है। हुज़ूर ने फ़रमाया है कि आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक संभव सहायता के लिए तैयार होंगे। मैंने ऐसा कोई मार्गदर्शक नहीं देखा। चाहे कोई राजनेतिक नेता हो, धार्मिक हो, अथवा कोई भी। हमारे पास ऐसा कोई लीडर नहीं। हुज़ूर की उपस्थिति में एक अजीब सकून है। मेरा विश्वास करें, यह बहुत अजीब भावना है। आप ने मुझे विश्वास दिलाया है कि आप मेरी कठिनाई और आवश्यकता के समय मेरे साथ होंगे। मेरा बहुत ही सौभाग्य है कि मैं यहाँ आई हूँ।

★ एक लोकल महिला अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं : यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मैं इस प्रोग्राम में सम्मिलित हुई। मैं महिलाओं की ओर गई और केवल कुछ पल वहां गुज़ारे तथा बहुत प्रभावित हुई। हुज़ूर अनवर का सन्देश बहुत ही अद्भुत था। मुझे आमंत्रित करने का बहुत शुक्रिया। हुज़ूर अनवर का ख़िताब समस्त आवश्यक बातें अपने भीतर लिए हुए था। आप लोगों का मोटो " मोहब्बत सबके लिए, नफ़रत किसी से नहीं" एक विश्वव्यापी सन्देश है और यही समय की आवश्यकता है।

★ एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : हुज़ूर अनवर की बातें बहुत प्रभाव डालने वाली है। हुज़ूर ने सन्देश दिया है कि वह तथा उनका संप्रदाय हर समय लोकल कम्युनिटी की सहायता के लिए तैयार है। यह एक बहुत अद्भुत सन्देश है। हुज़ूर को देखना एक बहुत अच्छा अनुभव था।

★ एक महिला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : ख़लीफ़ा ने जो सन्देश दिया है वह हमारे समाज के लिए बहुत आवश्यक है। लोग जिस देश में रहते हैं,

जहाँ टेक्स देते हैं, जहाँ उनके बच्चों का पालन-पोषण होता है, वह ऐसा देश नहीं होना चाहिए जहाँ किसी भी प्रकार का भय समाज में हो। इसलिए ख़लीफ़ा का शांति सन्देश हमारे लिए तथा हमारे समाज के लिए एक आशा की किरण है। यह संदेश बहुत आवश्यक है और हम सबको इस मक़सद को अपने समक्ष रखना चाहिए। इस वातावरण में मोहब्बत और प्रेम फैलाना बहुत आवश्यक क़दम है। यहाँ आकार बहुत प्रसन्नता हुई है। आप लोगों का बहुत शुक्रिया।

★ एक मेहमान ने कहा : ख़लीफ़ा का शांति सन्देश बहुत ज़रूरी था। आप ने फ़रमाया है कि एक दूसरे से मोहब्बत करो। यही शांति का स्त्रोत है। यदि आपस में मोहब्बत करेंगे एक दूसरे के अधिकारों का ध्यान रखेंगे तो शांति स्थापित हो जाएगी। यह बहुत आवश्यक संदेश है। यह प्रोग्राम बहुत संयोजित था। निमंत्रण देने का बहुत धन्यवाद।

★ एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : मुझे अफ़सोस हुआ है कि ख़लीफ़ा को यहाँ आकार इस प्रकार का संदेश देना पड़ा है कि इस्लाम से यहाँ के पड़ोसियों से कोई खतरा नहीं। दुर्भाग्य से हमारा समाज इस सीमा तक गिरावट का शिकार हो चुका है कि यहाँ आकर आपको यह कहना पड़ा है कि आप पड़ोसियों का ख्याल करेंगे और मोहब्बत फैलाएगें।

★ एक और मेहमान ने कहा : एक ईसाइ के तौर पर मैं मोहब्बत में विश्वास रखता हूँ। मैं इस जमाअत को तीस-चालीस वर्ष से जनता हूँ। निस्संदेह यह हमारे लिए अफ़सोस का स्थान है कि ख़लीफ़ा को यह सन्देश देना पड़ा है। मैं विश्वास रखता हूँ कि जो लोग यहाँ आएँगे, वे ख़ुदा की मोहब्बत प्राप्त करेंगे, शांति स्थापित करेंगे तथा लोगों की सेवा करेंगे। हुज़ूर अनवर के पधारने से यहाँ बरकत आई हैं।

★ एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : यहाँ आने से पहले मैं हुज़ूर अनवर को नहीं जनता था। अब मैं आपसे मिल चुका हूँ। आप एक विश्वव्यापी लीडर हैं और आपका व्यक्तित्व बहुत प्रभावित करने वाला है। मैंने आपके शब्द सुने हैं, आपके विचार देखें हैं, यह बहुत ही महान व्यक्ति हैं और संसार को और अधिक सुन्दर बनाने के लिए बहुत ही महान संदेश ले कर आए हैं। हम सबको इस संदेश को अपनाना चाहिए। आज की दुनिया में यह संदेश बहुत ही शानदार तथा आवश्यक है। संयम, सद्भाव, एक दूसरे को अच्छे अंदाज़ में जानने का प्रयास करना, यह बहुत मज़बूत संदेश है।

★ श्रीमान कोन्वेरी इंस्पेक्टर फिलाडेल्फिया पुलिस डिपार्टमेंट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : हमारे शहर तथा समाज में शांति की स्थापना के लिए जमाअत अहमदिया की ओर से पुलिस के साथ मिल कर काम करने का प्रयास बहुत ही प्रसन्नता का कारण है। जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा का ख़िताब सुन कर हाल में बैठा प्रत्येक व्यक्ति अनुभव कर रहा था कि जैसे यह ख़िताब उसी के लिए है।

★ Mr.Ryan Barksdale कम्युनिटी रिलेशन आफ़िसर ने कहा : आपकी जमाअत की ओर से आमंत्रित किए जाने पर बहुत प्रसन्न हूँ। हमारे शहर में आपकी इस मस्जिद का उदघाटन तथा इस्लाम के ख़लीफ़ा का शुभ आगमन इसी प्रकार उनका ख़िताब बेशक एक एतिहासिक बात है और हम भी इस एतिहासिक वाक़िया का अनुभव करके शांति के इस दिन का भाग बन गए हैं जो हमारी आँखों के सामने घटित हो रहा है।

★ Ms. Hajja Kiniaya Sharrieff ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा : मैं इस से पहले घाना, साल्ट पौंड के निकट जमाअत अहमदिया की मस्जिद तथा स्कूल देख चुकी हूँ। आज जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा को देख कर बहुत प्रसन्नता हुई है। हुज़ूर का ख़िताब एक संक्षिप्त और बहुत ही आकर्षण भरा ख़िताब था। आपके ख़िताब में विशेष रूप से उन लोगों को भी मुख़ातिब किया गया है जोकि गैर मुस्लिम हैं और इस्लाम के बारे में कुछ ख़ास नहीं जानते। आपकी मस्जिद भी बहुत सुन्दर है। इसी प्रकार आपकी जमाअत की ओर से समस्त मेहमानों को जो मान-सम्मान दिया गया है उसने भी मेरे दिल पर काफ़ी प्रभाव छोड़ा है।

★ Ms.Queen Samiyah mu'el ने कहा : आपकी मस्जिद बहुत सुन्दर है और हमारे शहर के केंद्र में शहर की सुन्दरता को बढ़ाने का कारण बन गई है। मेरा संबंध सेनेगल के एक सूफ़ी मक्तबा फ़िक्र से है। अत: जब आप के ख़लीफा का ख़िताब सुना तो उनकी प्रत्येक बात ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव डाला है आपकी जमाअत की मेहमान नवाज़ी ने भी मेरे दिल पर एक बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है।

★ Mr.Ibrahim Branham ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : आपकी जमाअत के भलाई के लिए कार्य इसी प्रकार हुकूमत के उच्च अधिकारीयों के साथ आपके संबंधों का चित्र उन अफ़सरों की यहाँ उपस्थिति से ज़ाहिर है। इसी प्रकार प्रत्येक प्रकार के क्षेत्रों से लोग यहाँ देख कर दिल आनंदित हो गया है। मैंने जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा को पहली बार अपनी आँखों से देखा है। आपके ख़लीफ़ा का व्यक्तित्व बहुत गरिमापूर्ण और प्रतापी है। इसी प्रकार उनका ख़िताब प्रत्येक उस व्यक्ति को जो अपने आप में शांति का इच्छुक है आवश्य अपनी ओर खींचेगा। आपके ख़लीफा का हमारे शहर में पधारना निस्संदेह हमारे शहर की इमेज को संसार के सामने बेहतर करके प्रस्तुत करने में बहुत बड़ा किरदार निभाएगा।

★ Ms.Roseanna Newwood ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : ख़लीफा का ख़िताब समझने के रूप से बहुत ही आसान था। स्पष्ट पता चलता था कि शब्द दिल की गहराईयों से निकल कर श्रोताओं के दिल में प्रवेश कर रहे थे। मैं आशा करती हूँ कि जमाअत अहमदिया की यह सुन्दर मस्जिद हमारे शहर में खुशहाली का प्रथम प्रयास साबित होगा। आपकी जमाअत ने हमारे शहर को एक नई आशा प्रदान की है जिस के लिए हम दिल से आपकी जमाअत के धन्यवादी हैं।

★ Mr.Bernard Smith ने कहा : मेरी आयु 85 वर्ष है और अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह को देख कर और उनका भाव विभोर ज्ञान वर्धक ख़िताब सुन कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं आशा करता हूँ कि ख़लीफ़तुल मसीह का ख़िताब हमारे शहर के निवासियों के लिए नई सुबह की आशा ले कर उदय होगा। आप की मस्जिद भी बहुत सुन्दर है। मैं वास्तव में आपकी मस्जिद बैतूल आफ़ियत के निकट ही रहता हूँ और इस मस्जिद का बनना मेरी आँखों के सामने पूर्णता को पहुंचा है। इसकी पूर्णता को देख कर बहुत प्रसन्नता महसूस कर रहा हूँ।

★ Sister Sylvia Strahler ने कहा : मैं पाकिस्तान में कैथोलिक संप्रदाय के मेडीकल मिशन के साथ 52 वर्ष काम कर चुकी हूँ। आपके मार्गदर्शक के भाषण से यह बात स्पष्ट होती है कि आप लोग समाज में शांति की स्थापना के लिए इसी प्रकार ग़रीबी दूर करने के लिए हर समय तैयार हैं। ख़ुदा आप की सहायता करे ताकि आप समाज में शांति की स्थापना में अपना आवश्यक किरदार निभा सकें।

★ Mr.Terry Guerra ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा : मैंने आज पहली बार जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के प्रोग्राम में भाग लिया है। और आज आपके ख़लीफ़ा का भाषण सुन कर मैं इस नतीजे पर पहुंची हूँ कि आप लोग इस्लाम धर्म के बहुत ही अच्छे राजदूत हैं। मैं क्योंकि धार्मिक रूप से कैथोलिक ईसाइ हूँ तो आप के ख़लीफ़ा का ख़िताब सुन कर यों प्रतीत होता था कि जैसे कैथोलिक कम्युनिटी के पोप ख़िताब कर रहे हैं। आज मैं इस नतीजे पर पहुंची हूँ कि बेशक हमारा धर्म आपके धर्म से भिन्न सही परन्तु दोनों धर्मों के मध्य एक ही रूह काम कर रही है।

★Sister Maria Hornung ने वर्णन किया : मैं आपकी कम्युनिटी से पहले से परिचित हूँ। मैं घाना में उस समय कैथोलिक मिशन के साथ काम कर चुकी हूँ जब आपके ख़लीफ़ा घाना मैं सेवा कर रहे थे। अत: आज आपकी मस्जिद में आकर आपके ख़लीफा का भाषण सुन कर मुझे यह एहसास होता था कि मानों मैं अपने ही घर में हूँ। जिस सुन्दर अंदाज़ में आपके ख़लीफ़ा ने ख़िताब फ़रमा कर अपने दृढ़ निश्चय का हमारे शहर के लिए प्रदर्शन किया है निस्संदेह हमारे दिलों में देर तक रहेगा।

(शेष बाद में)

(बहवाला अख़बार बद्र उर्दू 13 दिसंबर 2018 और 3-10 / जनवरी 2019)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 7 March 2019 Issue No. 10

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 9/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा अमरीका, अक्टूबर 2018 ई.

19 अक्तूबर 2018 ई० (जुमा के दिन)
शेष रिपोर्ट

मस्जिद बैतुल आफ़ियत के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर के ख़िताब के पश्चात् मेहमानों के विचार

★ एक मुस्लिम महिला और उनकी माता भी इस प्रोग्राम में सम्मिलित हुईं। कहती हैं कि हुज़ूर अनवर को देख कर बहुत प्रसन्नता हुई। एक दूसरे से मिल कर बहुत सी अच्छी बातें सिखने को मिलती हैं। मस्जिद का बनना बहुत ही अच्छा क़दम है। जो संदेश आप लोगों ने दिया है उसके माध्यम से इस्लाम के विरुद्ध फैलाई जाने वाली गलतफ़हमियां समाप्त होंगी। बहुत प्रसन्नता होती है कि मुसलमानों का एक और केंद्र बन गया है। लोगों में इस्लाम के विरुद्ध नफ़रत पाई जाती है, जोकि बिलकुल ग़लत है। हुज़ूर अनवर का संदेश बहुत मज़बूत था। मैं आशा करती हूँ कि हुज़ूर अनवर का संदेश अधिक से अधिक फैले और अमरीका के लोग इस्लाम की वास्तविकता जानें।

★ एक लोकल कांसलर भी इस प्रोग्राम में सम्मिलित हुए। यह अपने विचारों का प्रदर्शन करते हुए कहते हैं: हुज़ूर अनवर का शांति का संदेश बहुत ही आवश्यक था। विशेष रूप से मौजूदा अवस्था के संदर्भ में यह संदेश और भी अधिक आवश्यक हो गया है। मेरे लिए यहाँ आना बहुत सम्मान की बात है। मैंने इस मस्जिद को अपने सामने बनते देखा है। यहाँ इस मस्जिद की स्थापना इस क्षेत्र के लिए बहुत ही बरकत का कारण है। हुज़ूर अनवर ने जो यह संदेश दिया है कि आप लोग पड़ोसियों की आवश्यकता में उनके कंधे से कंधा मिला कर खड़े होंगे, मेरे विचार में केवल यहाँ फिलाडेल्फिया में ही नहीं समस्त अमरीका में इस संदेश की आवश्यकता है। हुज़ूर अनवर ने जो यहाँ के निवासियों के लिए नेक इच्छओं का प्रदर्शन किया है तथा आशा का प्रदर्शन किया है, मैं विश्वास रखता हूँ कि यह शहर भाई चारे का देश है और यह इस संदेश और इस आशा पर पूरा उतरेंगे।

★ एक गैर अहमदी इमाम भी इस प्रोग्राम में सम्मिलित थे। यह अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करते हुए कहते हैं : मेरा अहमदियों से पहला संबंध जमाअत की ओर से किए गए क़ुरआन करीम के अनुवाद के कारण हुआ था। यह अनुवाद मुझे बहुत अच्छा लगता है। हुज़ूर अनवर का संदेश बहुत ही अद्भुत था। मैं हुज़ूर अनवर से सौ फ़ीसदी सहमति रखता हूँ। यही हमारा मिशन तथा हमारा उद्देश्य है। हम सब आदम की सन्तान हैं और हमें एक दूसरे के जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। हम ने मिल कर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदेश को फैलाना है।

★ एक फ़िलिस्तीन मुसलमान महिला भी इस प्रोग्राम में सम्मिलित थीं। यह अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं: यहाँ आमंत्रित करने का बहुत धन्यवाद। यह बहुत सुन्दर मस्जिद है। मुझे आज आप लोगों से मिल कर बहुत प्रसन्नता हुई है। हुज़ूर अनवर का संदेश बहुत आवश्यक था। मेरा संबंध फ़िलिस्तीन के एक छोटे से गाँव से है। वह वास्तविक शिक्षाएं जो मैंने बचपन में सीखीं हैं, वह आज हुज़ूर अनवर के ख़िताब में देखने को मिलीं हैं। यही वास्तविक इस्लाम है, जिसका उन्होंने वर्णन किया है। हम जिस भी सम्प्रदाय से संबंध रखते हों, हमारा कर्तव्य हैं कि शांति के लिए एकजुट होकर काम करें। हुज़ूर अनवर की शांति के लिए सेवाएँ बहुत अद्भुत हैं। पड़ोसियों का ख्याल रखो, विभिन्न रंगों, संप्रदायों, धर्मों से संबंध रखने के बावजूद हम एक ख़ुदा को मानने वाले हैं और हमें मानवजाति की सेवा करने के लिए एकजुट होना चाहिए, यह एक अद्भुत संदेश था। आप ने वास्तविक रूप से समस्त मुसलमान कम्युनिटीज़ का प्रतिनिधित्व किया है।

★ एक स्कूल की डायरक्टर महिला भी इस प्रोग्राम में सम्मिलित हुईं। यह कहती हैं कि मेरे लिए यहाँ आना एक सम्मान की बात है। मैं चार पांच वर्ष से इसके बनने की प्रतीक्षा कर रही थी, अन्ततः यह एक सुन्दर मस्जिद बन गई है।

★ एक मेहमान ने कहा : हमारे समाज के लिए सब से आवश्यक चीज़ एकता है। यही हम लोगों को समझाते रहते हैं कि एकजुट हों। अलग-अलग होने में हानि है। हुज़ूर अनवर के इस संदेश को हमेशा समक्ष रखना चाहिए तथा हर समय इसी एक संदेश का प्रचार करते रहना चाहिए। सब से आवश्यक चीज़ यही है।

★ एक महिला अध्यापिका ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : मैं यह कहना चाहती हूँ कि यहाँ आकर मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं अपने घर में हूँ। हुज़ूर अनवर का संदेश, शांति संदेश बहुत अद्भुत था। यद्यपि मैं कैथोलिक हूँ, परन्तु हुज़ूर अनवर के एक-एक शब्द से सहमति रखती हूँ। मैं विश्वास से कहती हूँ कि इस्लाम शांति का संदेश देता है। इस्लाम मानवता की सेवा का दरस देता है। मेरी विद्यार्थी मार्या इरफ़ान ने मुझे निमंत्रण दिया है, मैं उसका धन्यवाद करना चाहती हूँ कि मुझे इतने अच्छे प्रोग्राम में बुलाया है। हमें मिल कर समाज की बेहतरी के लिए काम करना है। पड़ोसियों के संदर्भ में हुज़ूर अनवर का संदेश बहुत ही आवश्यक है। कई बार तो यह कहा जाता है कि यह बातें तो पता हैं, परन्तु आवश्यकता होती है कि कोई न कोई ध्यान दिलाए, और जब इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति ध्यान दिलाए तो एक नई रूह उत्पन्न हो जाती है। मैं आपकी बहुत धन्यवादी हूँ।

★ एक आर्किटेक्ट रिचर्ड ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा : मुझे आमंत्रित करने का बहुत शुक्रिया। मैं हुज़ूर अनवर के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आप ने जो शांति का संदेश दिया है, यह बहुत ही अद्भुत है। आजकल की परिस्थिति के कारण इस संदेश की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। मेरे लिए यह सन्देश और भी अधिक आवश्यक है क्योंकि मेरा संबंध फिलाडेल्फिया से है। यह देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि अंततः यह स्थान लोगों से भर गया है। मैं आरंभ से इस इमारत से जुड़ा रहा हूँ, यह इमारत मेरे सामने बनी है, ख़ुशी है कि अब यह कागज़ो से निकल कर वास्तविकता का रूप धारण कर गई है। प्रत्येक आर्किटेक्ट के लिए अंतिम प्रोडक्ट देखने की बहुत बड़ी ख्वाहिश होती है, चाहे वह घर हो, कोई मयूज़ियम हो अथवा कोई इबादत का स्थान। मुझे आज इस इमारत को देख कर बहुत प्रसन्नता हो रही है, यह मेरे लिए एक बहुत सुन्दर पुरस्कार है। अब यह डिज़ाइन के फेज़ से निकल कर प्रदर्शित रूप में आ चुकी है और अब यह समाज में एक सकारात्मक किरदार निभाती रहेगी। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मैं इस भव्य इमारत के बनाने में भागीदार हूँ।

★ एक प्रोफ़ेसर जो अपनी यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं : मेरे लिए यह बहुत ही अद्भुत अवसर था। मैं ने यह बात नोट की कि जैसे ही हुज़ूर हाल में पधारे एक अजीब सा सकून सभा पर छा गया। मैं बिलकुल हुज़ूर के निकट बैठा हुआ था और हुज़ूर के भाई

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad